भारतीय
पुरातत्व
सर्वेक्षण
आओ चलें
हुमायूँ का मक़बरा

आओ चलें

हुमायूँ का मक़बरा

कॉपी राईट © 2011

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
भारत सरकार

परिकल्पना एवं रचना
आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर

फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन
के समर्थन से

मूल ग्रन्थ – नारायणी गुप्ता
चित्रांकन – अनीता बालचन्द्रन
हिन्दी अनुवाद – निशात मंज़र

संपादक टीम (ए.के.टी.सी.) – रतीश नन्दा, संयुक्ता साहा, विभूती शर्मा

डिज़ाइन – सीचेंज.इन
प्रकाशन सहायिका – दीति रे
कवर फ़ोटोग्राफ़ – सिद्धार्थ चटर्जी
छायांकन वीथिका © आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर

विशेष आभार – डा. यूनुस जाफ़री द्वारा क्रोनोग्राम के अनुवाद हेतु,
डा. गौतम सेनगुप्ता, डा. बी. आर. मणि, जूथिका पाटणकर, पी. के. त्रिवेदी,
अरुंधती बैनर्जी, होशियार सिंह (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण)
अर्चना साद अख़्तर, रिंकेश राणा, नरेन्द्र स्वैन (ए.के.टी.सी.)

समस्त अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी अंश ए.एस.आई. द्वारा लिखित में प्राप्त की गई पूर्व अनुमति के बिना, या विधि द्वारा स्पष्ट निर्देश के विरूद्ध, अथवा पुनः प्रकाशन अधिकार संगठन के साथ तय की गई उचित शर्तों के विरूद्ध– पुनः प्रकाशित, पुनः प्राप्त करने हेतु संग्रहित, अथवा किसी अन्य रूप में या किसी भी साधन द्वारा रूपांतरित करना वर्जित है।

मुद्रण – इंडिया ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली
मूल्य – ₹ 50

आओ चलें

हुमायूँ का मक़बरा

लेखिका
नारायणी गुप्ता

चित्रांकन
अनीता बालचन्द्रन

महानिदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
द्वारा प्रकाशित

आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर
के सौजन्य से

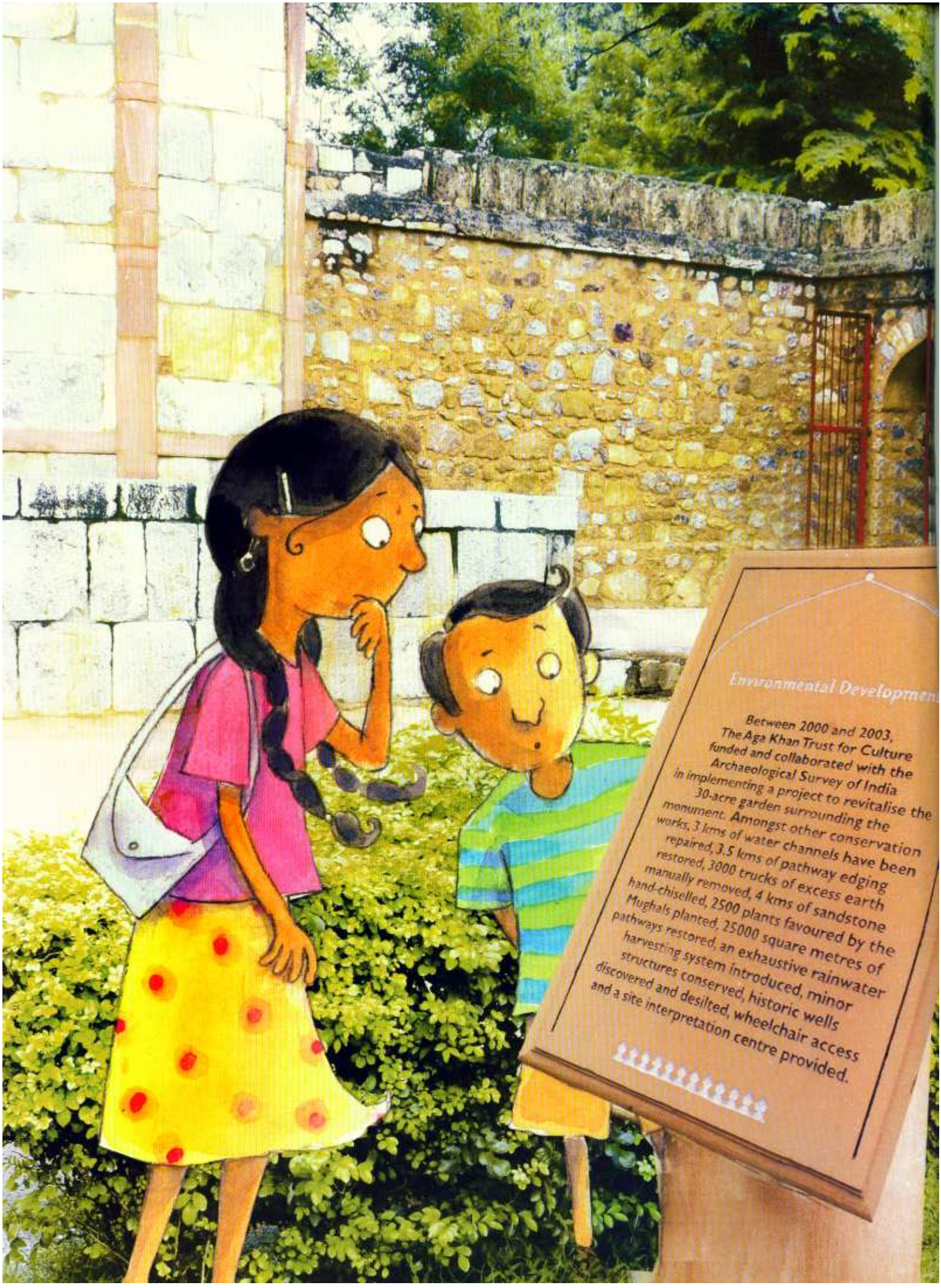
Environmental Development
Between 2000 and 2003, The Aga Khan Trust for Culture funded and collaborated with the Archaeological Survey of India in implementing a project to revitalise the 30-acre garden surrounding the monument. Amongst other conservation works, 3 kms of water channels have been repaired, 3.5 kms of pathway edging restored, 3000 trucks of excess earth manually removed, 4 kms of sandstone hand-chiselled, 2500 plants favoured by the Mughals planted, 25000 square metres of pathways restored, an exhaustive rainwater harvesting system introduced, minor structures conserved, historic wells discovered and desilted, wheelchair access and a site interpretation centre provided.

भूमिका

डा. गौतम सेनगुप्ता

महानिदेशक

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

वर्ष 2011 के बाल दिवस के अवसर पर मुझे दिल्ली के बच्चों एवं विश्व के उन सभी बच्चों को जो विश्व धरोहर की इस इमारत को देखने आते हैं, यह पुस्तक सौंपते हुये अत्यन्त हर्षोल्लास हो रहा है।

हमारा अनुमान है कि प्रत्येक वर्ष हुमायूँ के मकबरे को देखने के लिए लगभग 3,00,000 स्कूली बच्चे आते हैं और हम आशा करते हैं कि वे इस सुन्दरतापूर्वक चित्रित पुस्तक का आनन्द लेंगे जिसमें कई शताब्दियों पूर्व की यह ऐतिहासिक इमारत जीवित हो उठी है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक इस अद्‌भुत इमारत के विषय में न केवल अच्छी समझ प्रदान करेगी, बल्कि आने वाले समय में देश की इस सम्पदा को सुरक्षित रखने में बच्चों को एक आर्किटेक्ट, चित्रकार, इंजीनियर, पुरातत्ववेत्ता, बाग़ीचों के डिज़ाइनकर्ता तथा इतिहासकार के रूप में प्रेरित भी करेगी।

यह वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना का 150 वां वर्ष भी है। बाल साहित्य की योजनाबद्ध श्रृंखला की पहली पुस्तक के रूप में इसका अवलोकन – इस अवसर को मनाने का इससे अच्छा तरीका और क्या हो सकता था!

हुमायूँ के मक़बरे के बाग़ीचों और इमारत का रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कलचर के बीच लम्बे समय से चली आ रही भागीदारी का परिणाम है । मैं ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कलचर की प्रंशसा करता हूँ जिसने फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन के सहयोग से यह पुस्तक तैयार की है। मैं, अनीता बालचन्द्रन का इस पुस्तक के लिये चित्र तैयार करने तथा डा. नारायणी गुप्ता का मूल ग्रंथ लिखने के लिये धन्यवाद करता हूँ।

सभी बच्चों और उनके परिवारजनों के लिये शुभ कामनायें।

हुमायूँ का मक़बरा

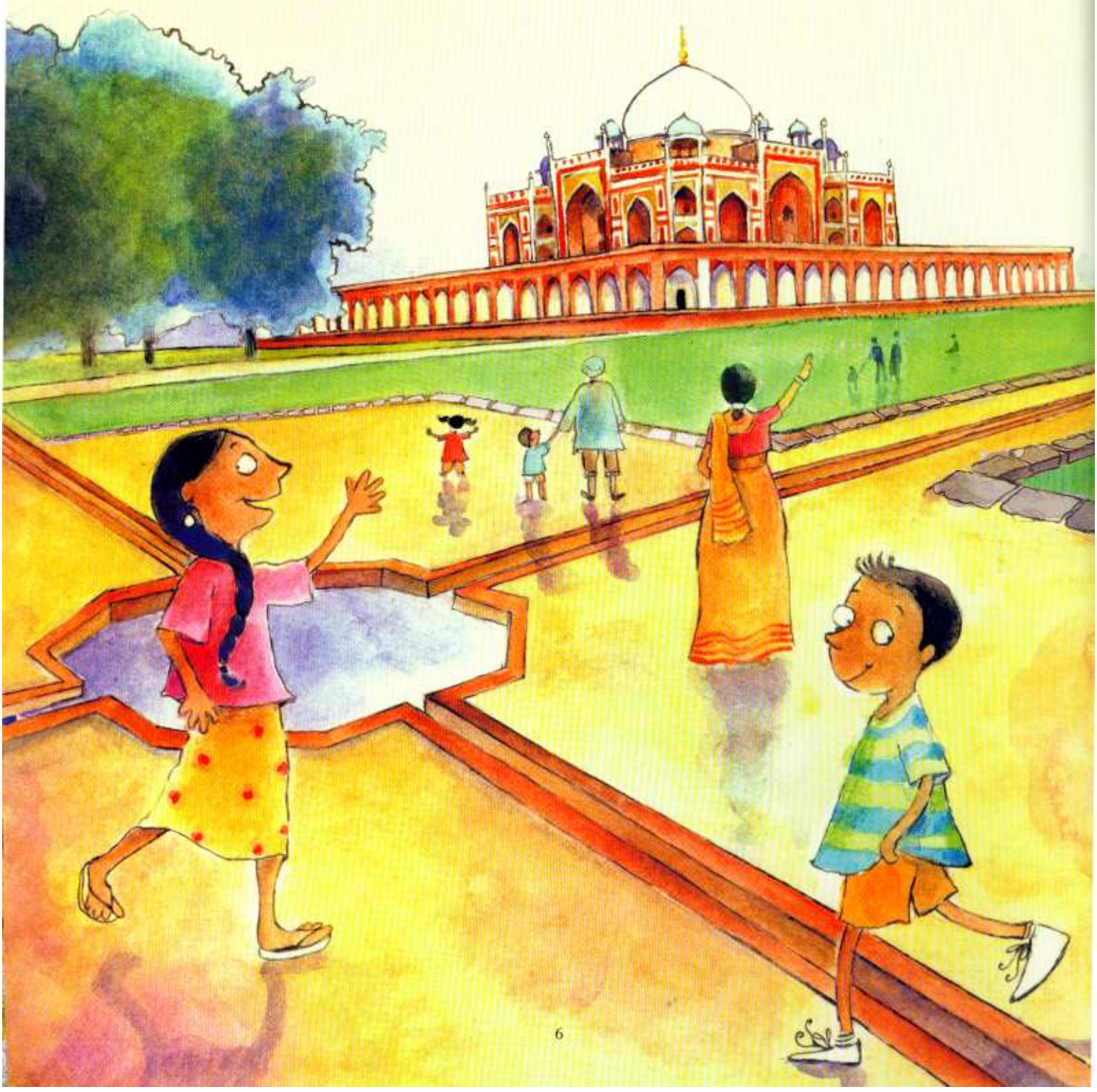

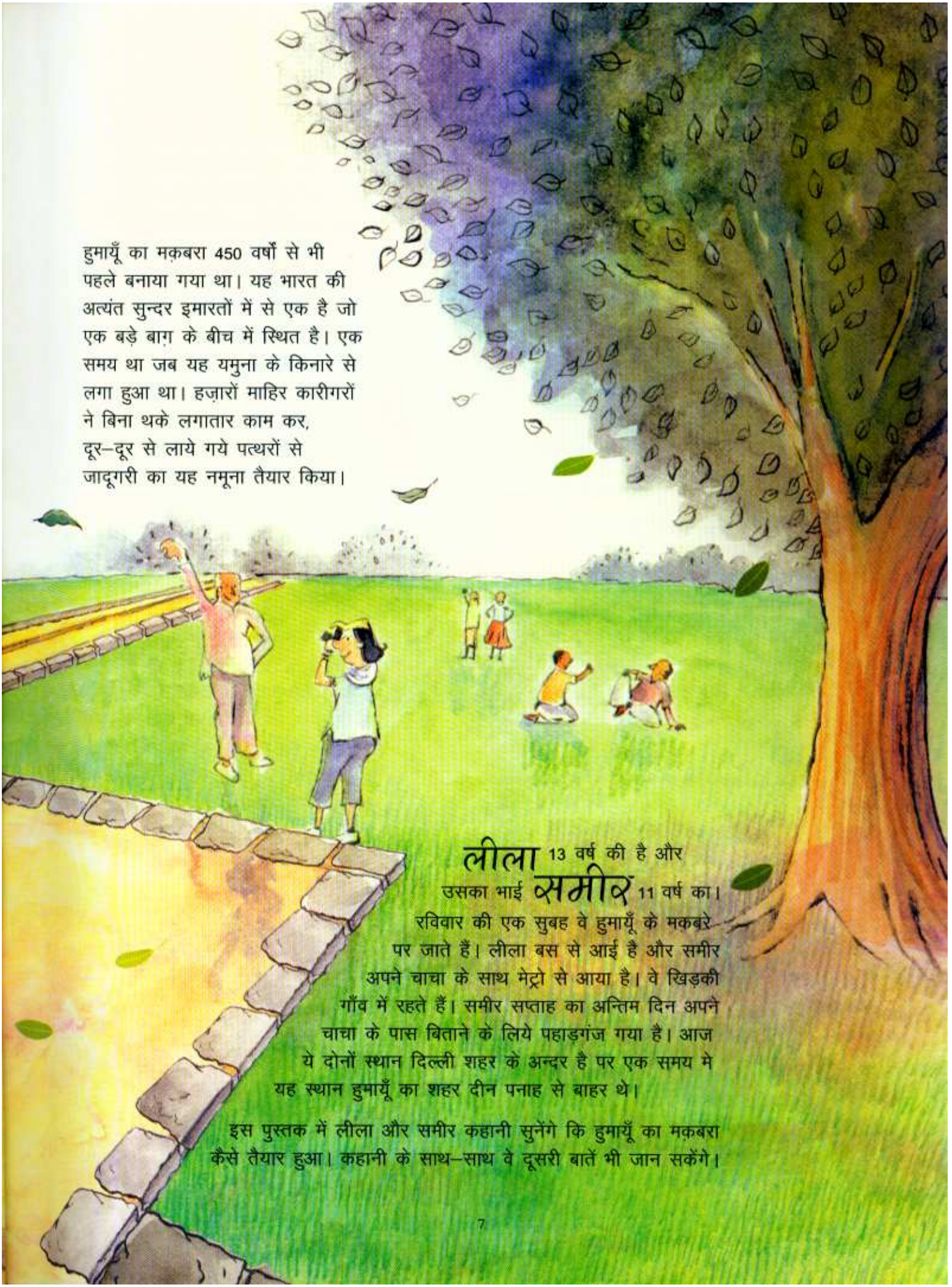

हुमायूँ का मक़बरा 450 वर्षों से भी पहले बनाया गया था। यह भारत की अत्यंत सुन्दर इमारतों में से एक है जो एक बड़े बाग़ के बीच में स्थित है। एक समय था जब यह यमुना के किनारे से लगा हुआ था। हज़ारों माहिर कारीगरों ने बिना थके लगातार काम कर, दूर–दूर से लाये गये पत्थरों से जादूगरी का यह नमूना तैयार किया।

लीला 13 वर्ष की है और उसका भाई **समीर** 11 वर्ष का। रविवार की एक सुबह वे हुमायूँ के मक़बरे पर जाते हैं। लीला बस से आई है और समीर अपने चाचा के साथ मेट्रो से आया है। वे खिड़की गाँव में रहते हैं। समीर सप्ताह का अन्तिम दिन अपने चाचा के पास बिताने के लिये पहाड़गंज गया है। आज ये दोनों स्थान दिल्ली शहर के अन्दर है पर एक समय मे यह स्थान हुमायूँ का शहर दीन पनाह से बाहर थे।

इस पुस्तक में लीला और समीर कहानी सुनेंगे कि हुमायूँ का मक़बरा कैसे तैयार हुआ। कहानी के साथ–साथ वे दूसरी बातें भी जान सकेंगे।

बादशाह अकबर

निज़ामुद्दीन दरगाह

लीला और समीर जानेगें कि किस प्रकार जलालुद्दीन अकबर ने, जो केवल 13 वर्ष की आयु में बादशाह (सम्राट) बने, अपने प्रिय पिता हुमायूँ का मक़बरा बनवाया।

यह बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन की भी कहानी है जहाँ लगभग 700 वर्षों से हज़ारों लोग सूफ़ी संत हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से, जो इस जगह रहते थे, दुआ लेने आते हैं। यह पुराने क़िले की भी कहानी है जिसके बनाने की शुरूआत हुमायूँ ने की थी।

बादशाह हुमायूँ

यह कहानी है दिल्ली क्षेत्र के गरम और
शुष्क वातावरण की जो नहरों के जाल,
पेड़ और फूलों के पौधों को लगाने के बाद
अद्‌भुत रूप से बदल गया।

पुराना किला

यह भी बताया जायेगा कि किस प्रकार से
ठोस पत्थरों को हाथों से सावधानी पूर्वक
काटकर लम्बे समय तक खड़ी रहने वाली
इमारतों के बनाने के काम में लाया गया।

यह हमारे देश की कहानी है जहाँ पर
लोग, विचार और विभिन्न कलाऐं
लगातार परिवर्तनशील हैं और हमेशा
अद्‌भुत परिणाम सामने आते रहे हैं।

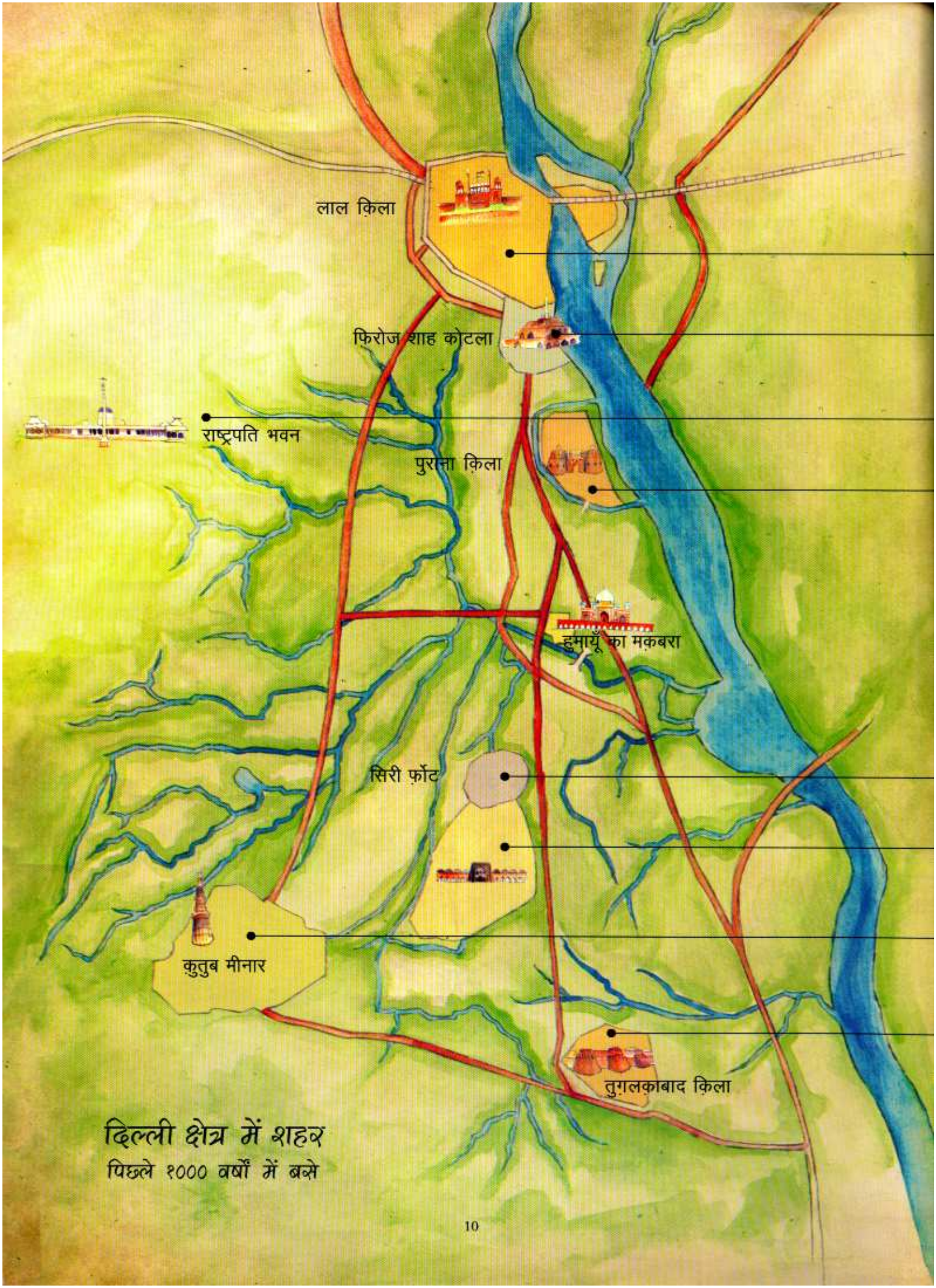

दिल्ली क्षेत्र में शहर

पिछले १००० वर्षों में बसे

दिल्ली के शहर

सातवाँ शहर
शांहजहानाबाद

पाँचवाँ शहर
फ़िरोज़ाबाद

आठवाँ शहर
नई दिल्ली

छठा शहर
दीन पनाह और पुराना क़िला

हज़रत निज़ामुद्दीन एक सूफ़ी थे जो यहाँ चौदहवीं शताब्दी ई. के शुरू में रहते थे।

यह विश्वास करना मुश्किल है कि 1,00,000 वर्ष पहले दिल्ली का अधिकतर भाग जंगल था। जो लोग यहाँ रहते थे वे पत्थरों को छोटे टुकड़ों (लधु पाषाण) को औज़ार और हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे। काफी समय बाद जंगल का कुछ हिस्सा साफ़ कर ज़मीन को खेती करने के लिये समतल कर लिया गया। फिर शहर बने। पिछले एक हज़ार वर्षों में यहाँ बने शहरों में किसी किसी की जनसंख्या 50,000 से भी अधिक थी। आज ये सभी शहर आधुनिक विस्तृत दिल्ली का हिस्सा हैं जहाँ अब लगभग 14,000,000 लोग रहते हैं।

दूसरा शहर
सिरी

चौथा शहर
जहाँपनाह

पहला शहर
लाल कोट

इस सारे इलाक़े में आज भी ग्यारहवीं शताब्दी और उसके बाद के समय की दीवारों तथा इमारतों के अवशेष मिलते हैं। कुछ शहरों के चारों ओर दीवार बनी थी जिसके बाहर बाग़, खेत, बाग़ीचे और बारिश का पानी जमा करने के लिये तालाब बने थे।

तीसरा शहर
तुग़लक़ाबाद

पहाड़ी जंगल तथा यमुना नदी के बीच का त्रिकोणीय इलाका दिल्ली कहलाता था। जब भी कोई शासक यहाँ क़िला बनवाता था, वह जगह जल्दी ही एक छोटे से शहर में बदल जाती थी और इसका नाम शासक के नाम पर या उसकी पदवी के अनुसार पड़ जाता था। केवल सीरी और अंग्रेजों द्वारा बसाई गई नई दिल्ली का नाम शासकों के नाम पर नहीं रखा गया (यदि ऐसा होता तो पहले स्थान का नाम ख़िल्जिआबाद तथा बाद वाले का जार्जटाउन होता)।

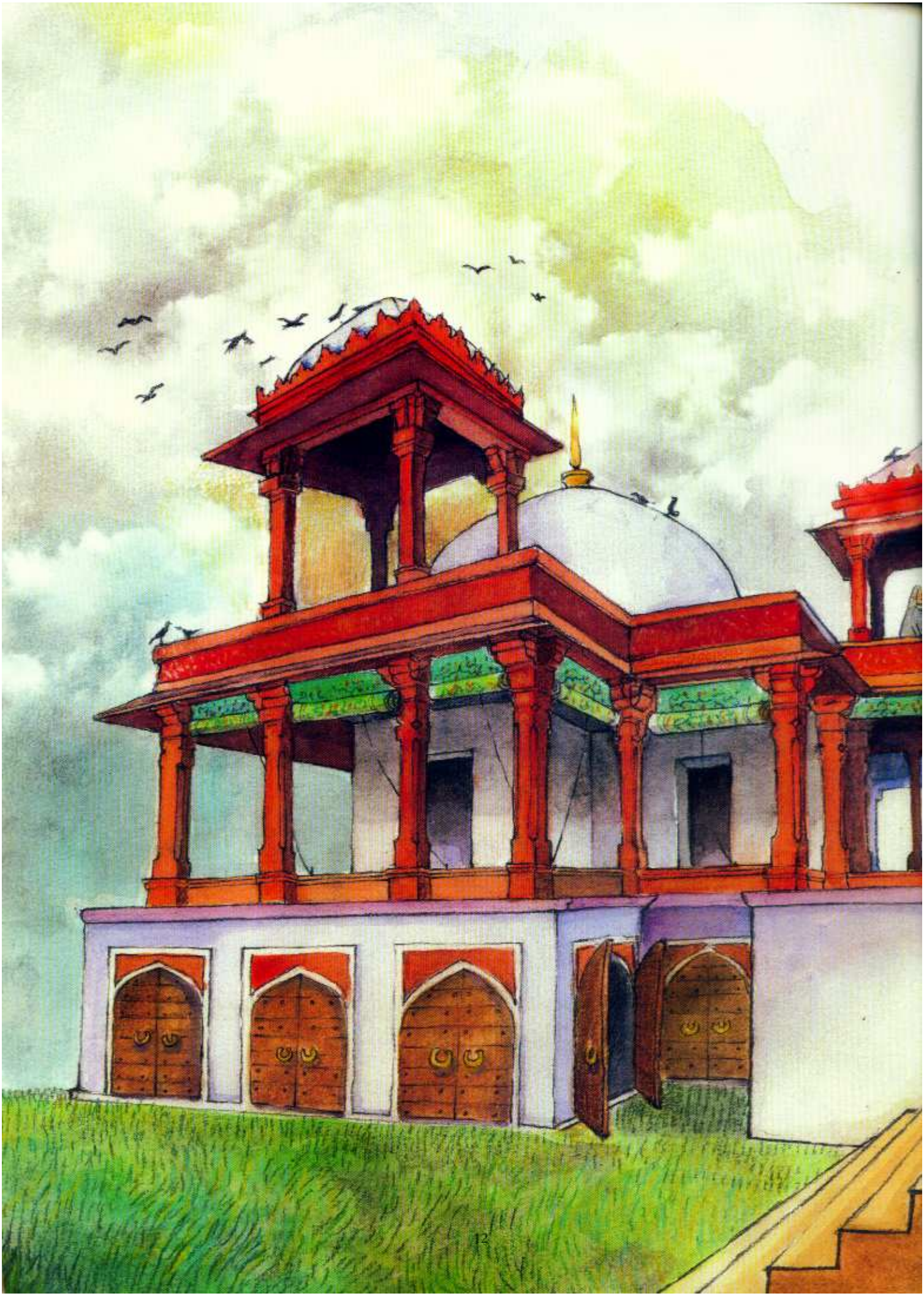

बलबन का
लाल महल

ग़्यासुद्दीन बलबन ने, सुल्तान इल्तुतमिश के शासनकाल में अपना महल यमुना के किनारे बनाया था और यह क्षेत्र ग़्यासपुर के नाम से जाना जाने लगा। लाल पत्थर से बना लाल महल भारत में इस्लामी परम्परा पर आधारित सब से पुराना महल है जो अभी भी विद्यमान है। आज कल यह एक निजी सम्पत्ति के रूप में इस्तेमाल हो रहा है और आम लोग इसे नहीं देख सकते।

बाद में बलबन दिल्ली का सुल्तान बन गया और महरौली के लाल कोट महल में रहने लगा। भारत के दूसरे भागों तथा पश्चिमी व मध्य एशियाई क्षेत्रों से बहुत से लोग दिल्ली आकर रहने लगे। उन्हीं में से एक महिला बीबी जुलेख़ा थीं। वे बदायूँ शहर से अपने पाँच वर्ष के पुत्र निज़ामुद्दीन (जन्म 1238 ईस्वी) के साथ यहाँ आईं।

बाद में जब हज़रत निज़ामुद्दीन बीस वर्ष के थे तो वे एक प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज–ए–शकर, जो बाबा फ़रीद भी कहलाते हैं और अजोधन नामक स्थान में रहते थे, के शिष्य हो गये (अजोधन अब पाकपट्न कहलाता है और पाकिस्तान में है)।

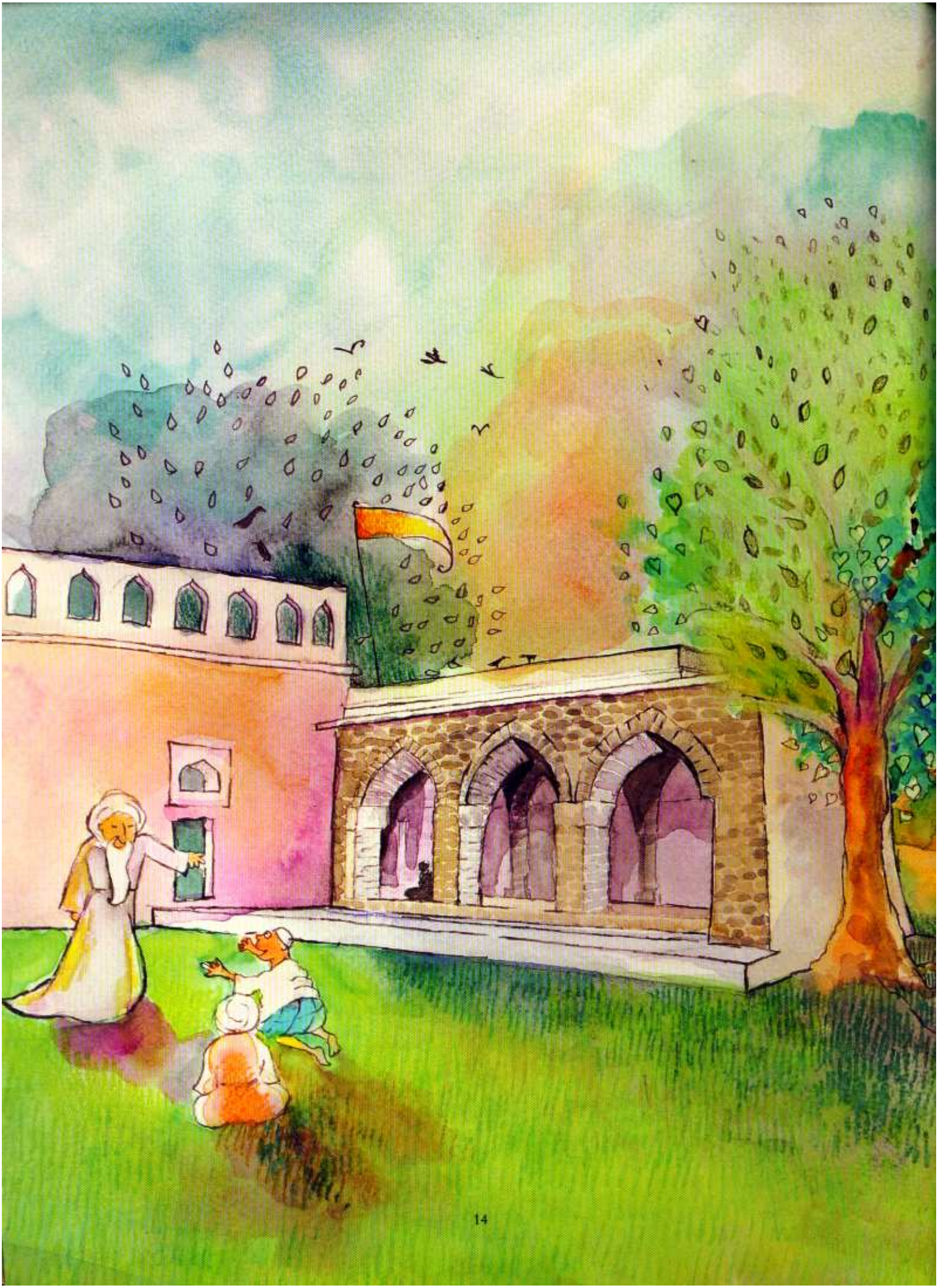

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया

जब हज़रत निज़ामुद्दीन ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली तो वे दिल्ली लौट आये और ग़्यासपुर में रहने लगे। यहाँ उन्होंने नदी के किनारे अपने लिये एक चिल्ला गाह (ध्यानमग्न रहने के लिये एक शांत स्थान) बनाई। चौदहवीं शताब्दी में यमुना एक चौड़ी, पानी से भरी, चमकती हुई साफ़ और मछलियों से भरपूर नदी थी जिससे लोगों को पीने, नहाने, खेतों और बाग़ों को सींचने के लिये पानी मिलता था। यह एक भीड़ भाड़ वाले राजमार्ग की तरह था जिससे बहुत से लोग नाव के द्वारा दिल्ली आते जाते थे।

जब हज़रत निज़ामुद्दीन के प्रेमोपदेशों का समाचार फैला तो दूर–दूर से लोग उनसे दुआऐं लेने और उनके उपदेश सुनने के लिये आने लगे। सूफ़ी संत उनसे आग्रह करते थे कि वे ईश्वर के प्रेम को पहचानें और सभी को उनके धर्म और जाति के आधार पर न पहचान कर, सब को बराबर समझें। वे अपने शिष्यों को समझाते थे कि ईश्वर से निकटता प्राप्त करने का सबसे उत्तम रास्ता जनसेवा है। यह संत 'औलिया' (ईश्वर का मित्र) के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

विभिन्न धर्मों के मानने वाले उनके प्रशंसक उनकी ख़ानक़ाह में इकट्ठे होने लगे, जहाँ वे ठहरते भी थे और साथ खाते पीते भी थे।

बावली
की कहानी

हज़रत निज़ामुद्दीन ने एक बाओली बनवाना शुरू किया ताकि आने जाने वालों को साल भर पानी मिलता रहे। उसी वर्ष सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक ने अपनी राजधानी तुग़लकाबाद के निर्माण का आदेश दिया। कारीगर रात के समय बाओली के निर्माण का कार्य करते।

सुल्तान इस पर क्रोधित हुआ और आदेश दिया कि कोई भी व्यक्ति उनको चिराग़ के लिये तेल नहीं बेचेगा, जिससे रात को काम ना हो पाए।

हज़रत निज़ामुद्दीन ने अपने शिष्य नसीरुद्दीन से कहा कि वे चिराग़ों को पानी से भर दे और उनकी विशेष शक्ति के बल पर चिराग़ों की बत्तियाँ जल उठीं। बावली तैयार हो गई और उसी दिन से नसीरुद्दीन को चिराग़–ए–दिल्ली कहा जाने लगा।

जब 1325 में हज़रत निज़ामुद्दीन का देहांत हो गया तो उनकी मज़ार बावली के पास बनायी गयी और इस जगह का नाम ग़यासपुर से हज़रत निज़ामुद्दीन हो गया।

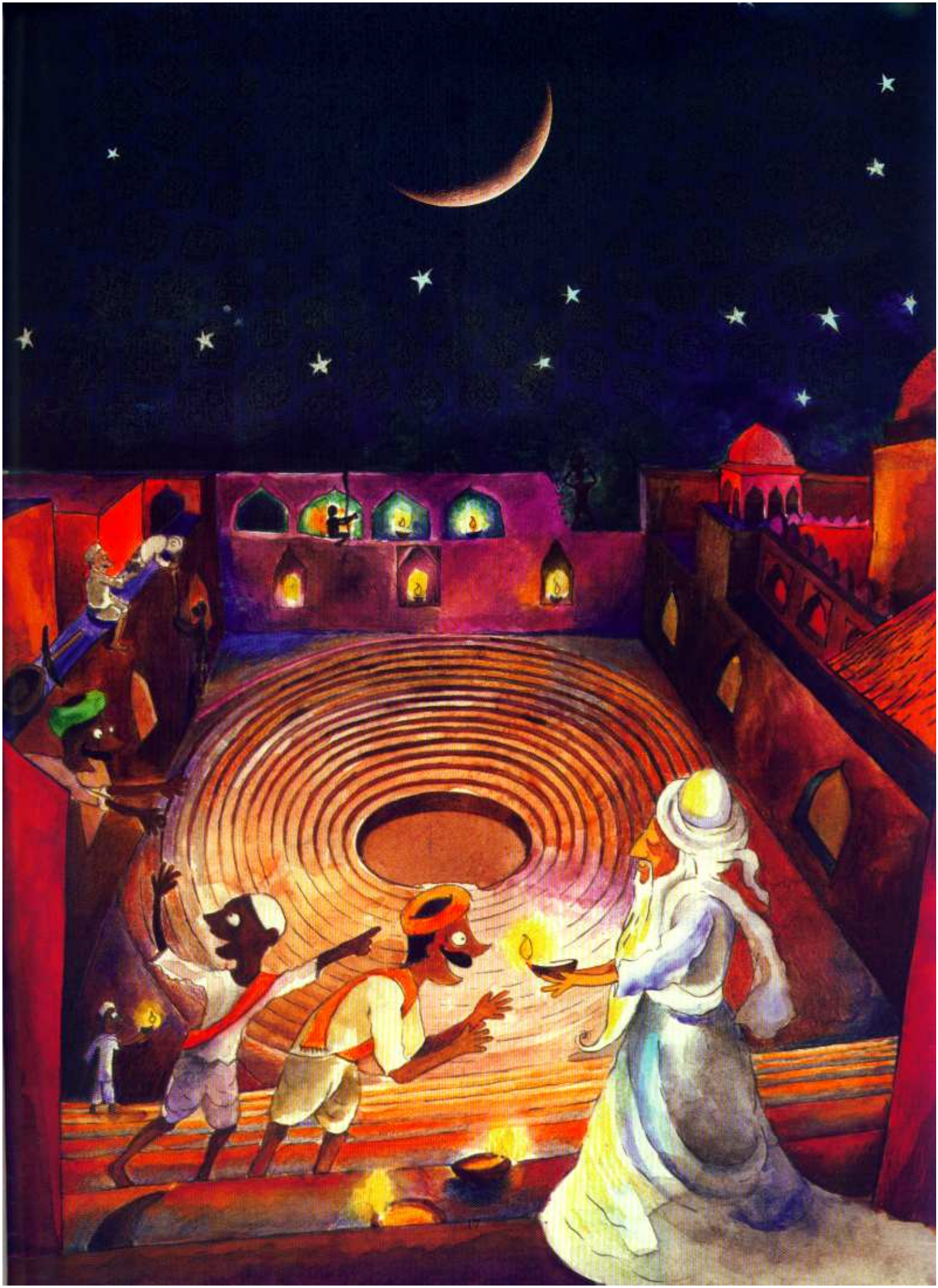

हज़रत निज़ामुद्दीन और अमीर ख़ुसरो

प्रसिद्ध कवि और सूफ़ी अमीर ख़ुसरो हज़रत निज़ामुद्दीन के प्रिय शिष्य थे। एक दिन प्रातः काल हज़रत निज़ामुद्दीन व ख़ुसरो यमुना के किनारे बैठे लोगों को स्नान करते और सूर्य की पूजा करते देख रहे थे। हज़रत निज़ामुद्दीन ने ख़ुसरो से कहा–

'हर क़ौम रास्त राहे, दीन–ए व क़िबला गाहे'
(अर्थात् सब का अपना धर्म और उपासना करने का अपना तरीका है)

हज़रत निज़ामुद्दीन की तरह ख़ुसरो (जन्म 1253) जब छोटे थे तो उनके पिता का देहान्त हो गया था और उनका लालन–पालन सुल्तान के दरबार में हुआ। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था और वे फ़ारसी व हिन्दवी में लिखते थे। कहा जाता है कि उन्होंने सितार और तबले का आविष्कार किया। उन्होंने क़व्वाली की परम्परा की भी शुरूआत की जो हज़रत निज़ामुद्दीन के प्रति श्रद्धा में लिखे और गाये जाने वाले गीत थे।

पवन चलत वह देह बढ़ावे
जल पीवत वह जीव गंवावे
है वह प्यारी सुन्दर नार
नार नहीं पर है वह नार

कहते हैं कि ख़ुसरो हज़रत निज़ामुद्दीन के देहांत पर इतने अधिक दुःखी हुए कि जल्दी ही उनकी मृत्यु हो गई और उनके प्रिय गुरु की दरगाह के करीब ही उनका मज़ार बनाया गया।

हज़रत निज़ामुद्दीन और ख़ुसरो के देहांत के बाद एक शून्यता का वातावरण पैदा हो गया परन्तु सूफ़ी संत का तेज अभी भी लोग महसूस करते थे। शताब्दियाँ गुज़र जाने के बाद भी सैकड़ों लोग बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में उनकी दरगाह पर लगातार आते रहे। उनके वंशजों और प्रशंसकों ने अतिथि–सत्कार की इस परम्परा को बनाये रखा है तथा आज भी हर ब्रहस्पतिवार की शाम को यहाँ क़व्वाली से गुंज उठती हैं।

बसंत ऋतु में दरगाह

सबसे अधिक भीड़ हज़रत निज़ामुद्दीन तथा ख़ुसरो के उर्स (जो उनके देहांत का वार्षिकोत्सव है) पर होती है। बसंत यहाँ बड़े अद्‌भुत रूप में मनाया जाता है। उस समय सभी लोग पीले कपड़े पहनते हैं और मज़ार पर पीले फूल चढाते हैं।

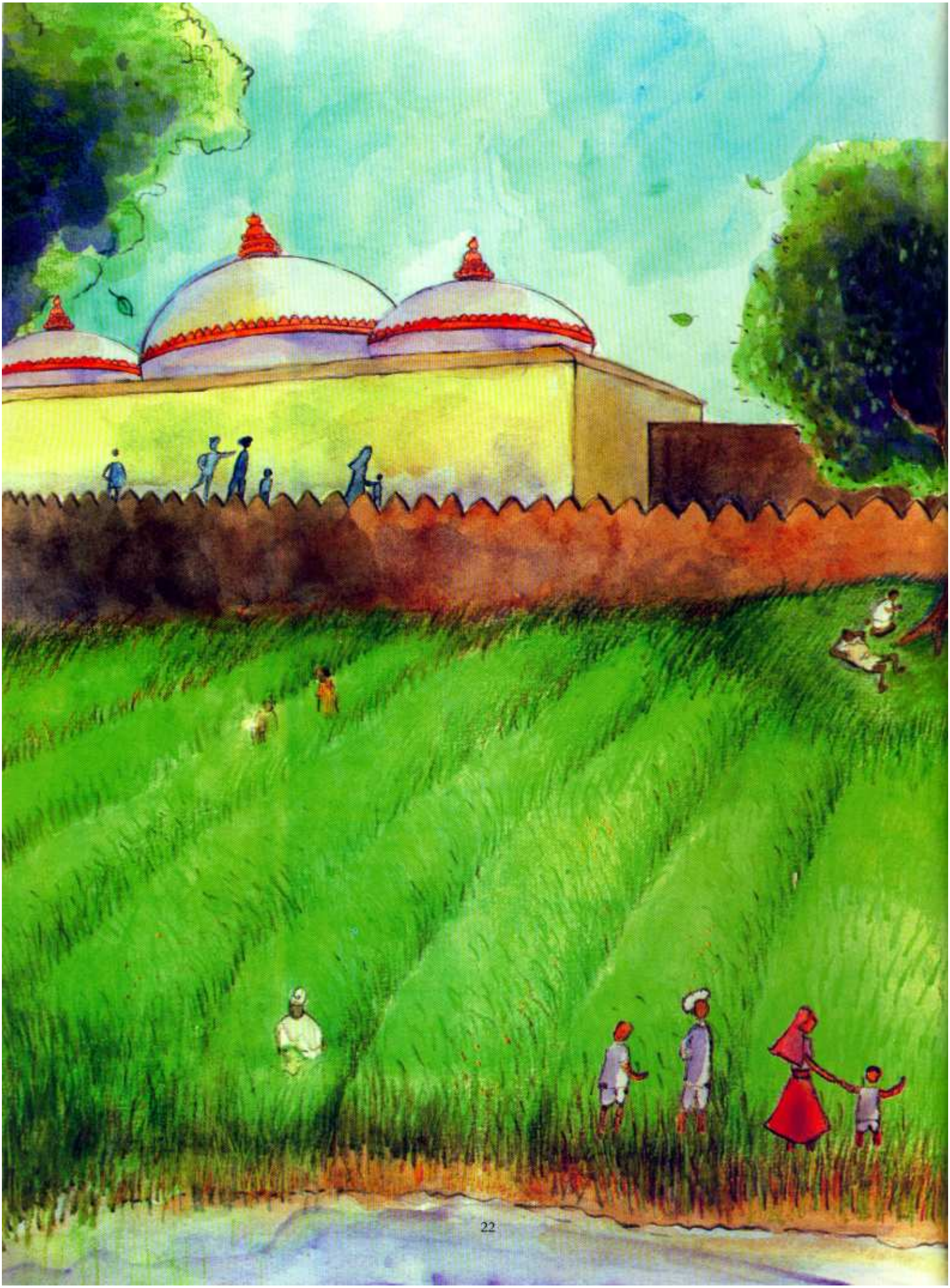

कुशक नाला

उन लोगों के अलावा जो हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह की ज़ियारत के लिये आते थे, अनेक विद्वान, लेखक, व्यापारी और शिल्पकार भी भारत तथा एशिया के अन्य भागों से दिल्ली आते रहते थे।

शहर के बाज़ारों में हमेशा भीड़ रहती थी। उस समय दिल्ली के अधिकतर भाग में खेत, बाग़ और बाग़ीचे थे और उन सब की सिंचाई नहरों द्वारा होती थी। जो नाला उस समय सिंचाइ के लिए इस्तमाल होता था और आज साकेत से निज़ामुद्दीन होता हुआ यमुना में मिल जाता है, वह कुशक नाला कहलाता है।

जब शहर में लोगों की संख्या बढ़ी तो प्रार्थना करने के लिये अधिक जगह की आवश्यकता पड़ी। सुल्तान फ़िरोज शाह के वज़ीर ख़ान –ए– जहाँ तिलंगानी ने दिल्ली में सात मस्जिदें बनवाईं। इनमें से एक निज़ामुद्दीन इलाक़े में थी जहाँ तिलंगानी का भी मक़बरा है। तुग़लक शासकों के बाद सय्यद और लोदी शासकों ने शासन किया। अंतिम लोदी शासक इब्राहीम को काबुल के बादशाह ज़हीरुद्दीन बाबर ने 1526 में पानीपत में पराजित किया।

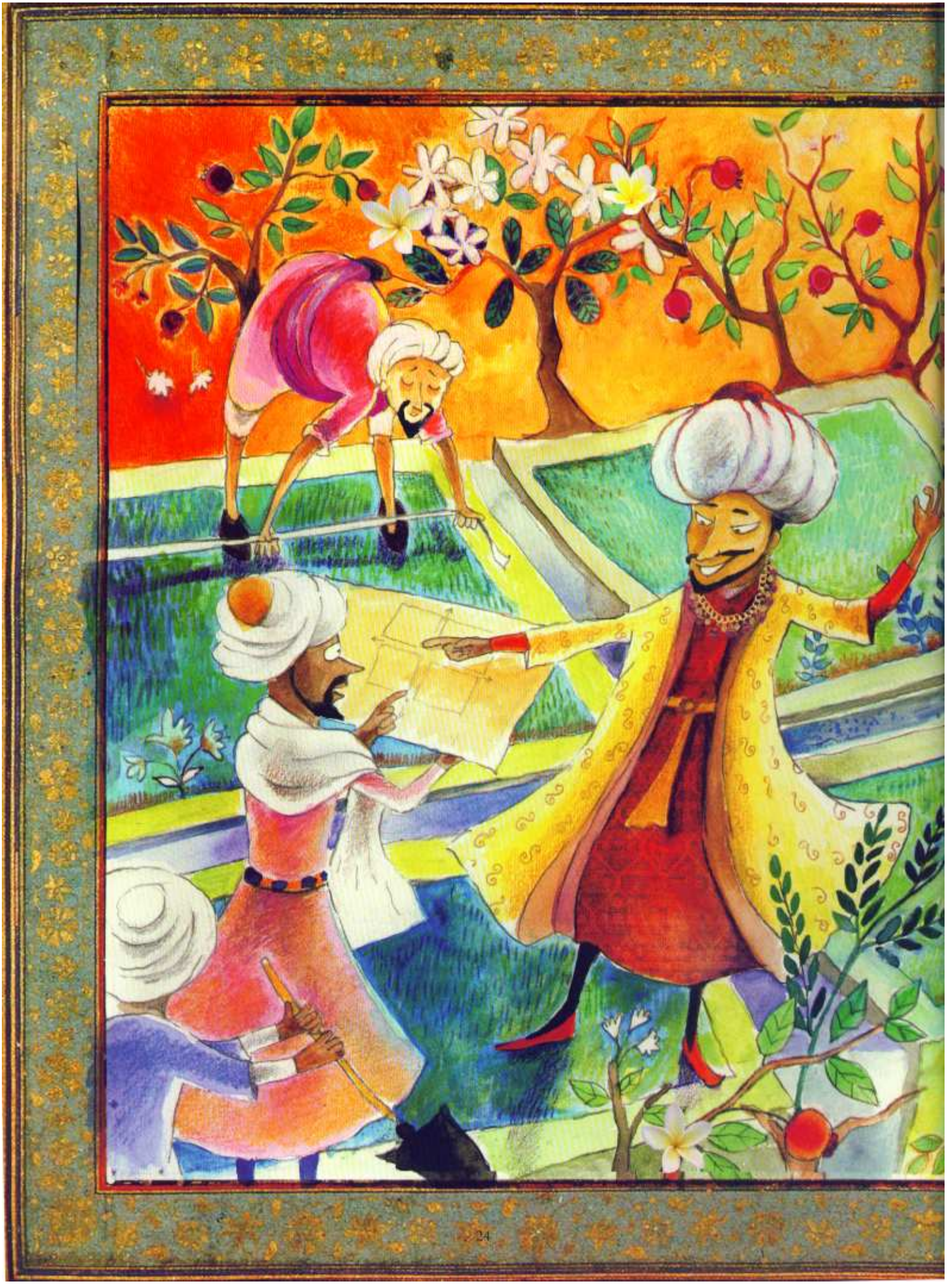

बाबर
अपने बाग़ीचे में

ज़हीरुद्दीन बाबर 12 वर्ष की आयु में अपने पिता उमर शेख़ मिर्ज़ा की मृत्यु के बाद फरग़ाना (आधुनिक उज़बेकिस्तान में) का शासक बना। 21 बर्ष की आयु में बाबर ने काबुल पर विजय प्राप्त की। पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद वह दिल्ली आये और हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह पर हाज़िरी दी।

हिन्दुस्तान की गर्मी से तंग आकर बाबर को काबुल और समरक़न्द के बाग़ों की बहुत याद आती थी। इस लिये उन्होंने आगरा, ग्वालियर और धौलपुर मे चारदीवारी बाग़ात लगाने का काम शुरु किया गया।

जब 1530 में उनकी मृत्यु हो गई तो उनके मृत शरीर को काबुल ले जाया गया और काबुल नदी के किनारे बने सीढ़ीदार सुन्दर बाग़ीचे में सफ़ेद संगमरमर के खुली छत वाले मक़बरे में दफ़नाया गया। इसे बाग़–ए–बाबर का नाम दिया गया।

बाबर नामा

बाबर ने मंगलवार 23 अप्रैल 1526 को अपनी डायरी में लिखा:

"मैंने शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया के मक़बरे का तवाफ़ (चक्कर लगाना) किया और दिल्ली शहर के ठीक सामने यमुना के किनारे पड़ाव डाला। उस शाम मैंने दिल्ली के क़िले (फ़िरोज़ शाह कोटला) की सैर की और वहाँ रात बिताई। अगली सुबह बुधवार को मैंने (महरौली में) ख़्वाजा कुतुबुद्दीन के मक़बरे की ज़ियारत की और ग़्यासुद्दीन बलबन और अलाउद्दीन ख़लजी के मक़बरे की सैर की। साथ ही अन्य इमारतें और मीनार (कुतुब मीनार) हौज़ शमसी, हौज़ ख़ास और सुल्तान बहलोल व सिकंदर के मक़बरे व बाग़ीचे भी देखे।"

बाबर और उसका बेटा

बाबर एक स्वस्थ और फुर्तीले व्यक्ति थे। जब केवल 47 वर्ष की आयु में उन्का देहांत हो गया तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ। बाद में पता चला कि क्या हुआ था– बाबर के बेटे हुमायूँ बीमार पड़े और हकीमो को उन का जीवन बचाने का कोई रास्ता नही सूझ रहा था।

उस समय किसी ने बादशाह को बताया कि भारत में लोगों की मान्यता है कि यदि आप अपनी सब से बहुमूल्य वस्तु ईश्वर को समर्पित कर दे तो ईश्वर से अपने किसी प्रिय जन का जीवन बचाने की प्रार्थना कर सकते हैं। जब बाबर इसके लिये तैयार हो गये तो लोगों ने सोचा कि कोह–ए–नूर हीरा भेंट किया जाएगा। बाबर ने मुस्कुरा कर कहा–"मैं ईश्वर को एक पत्थर नहीं भेंट कर सकता।" बाबर ने ईश्वर से हुमायूँ के जीवन के बदले अपना जीवन स्वीकार करने की प्रार्थना की।

बाबर ने अपने बेटे के बिस्तर के चारों ओर चक्कर लगाये, और हुमायूँ धीरे–धीरे अच्छे होने लगे। बाबर कमज़ोर और बीमार हो गयें और 26 दिसंबर 1530 को उनकी मृत्यु हो गई।

दीन पनाह का क़िला

बादशाह बनने पर हुमायूँ ने एक शहर बसाने की योजना बनाई और उसे दीन पनाह का नाम दिया। इसका महल व क़िला हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह के पास यमुना के किनारे बना था जिसे अब पुराना क़िला के नाम से जानते हैं।

हुमायूँ को अपने पिता की तरह बाग़ों और फूलों से प्यार था। उन्हें खगोल विद्या और अध्ययन का भी शौक़ था। उन्होंने हस्तलिखित और चित्रित पुस्तकें जमा कर के एक पुस्तकालय भी बनाया था।

नावों पर बना बाज़ार

हुमायूँ के आविष्कारों में से एक 'चहार ताक़' नामक नाव थी। नाव बनाने वालों ने कई बड़ी नावें तैयार कीं। नाव के दोनों तरफ़ दुकाने बनाईं और बीच में एक बड़े कक्ष के साथ एक बाज़ार बनाया गया। एक शाही आदेश के अनुसार अलग–अलग कलाओं से जुड़े लोगों से कहा गया कि वे इन नावों पर अपनी दुकानें खोलें। अकबर के दरबार के इतिहासकार अबुल फ़ज़ल ने इस बाज़ार को शोभायमान कहा है।

हुमायूँ ने कभी नहीं सोचा होगा कि उनका जीवन संघर्ष में बीतेगा। उन्हे कई युद्ध लड़ने पड़े। उनका राज्य अफ़ग़ानिस्तान से बिहार तक फैला था। फिर हुमायूँ ने बंगाल को भी विजित करने की योजना बनाई। उनके रास्ते में बिहार पड़ता था जो शेर ख़ान के अधीन था। उसने बादशाह को बंगाल जाने दिया और फिर पीछे से उनका रास्ता बन्द कर दिया। उसके बाद उसने बादशाह के राज्य के कई भागों पर एक एक कर अपना अधिकार जमा लिया। कन्नौज की लड़ाई हार जाने के बाद हुमायूँ को भारत छोड़ना पड़ा और शेर ख़ान दिल्ली का बादशाह बन गया। उसने शेर शाह की उपाधि धारण की।

जब शेर शाह ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और हुमायूँ बेघर हो गये तो वह वफ़ादार समर्थकों के एक छोटे से गुट के साथ सिंध होता हुआ फ़ारस चले गये।

भटकते हुए बादशाह

फ़ारस में हुमायूँ अकेले नहीं थे। उनकी पत्नी उनके साथ थीं और फ़ारस के बादशाह शाह तहमास्प ने भी एक अतिथि के रूप में उनको सम्मान दिया और शाही बाग़ों मे ठहराने का इन्तज़ाम किया गया। फ़ारस के सुन्दर उद्यानों को देखकर उन्हें पता चला कि उनके पिता को क्यों उद्यान लगाने में इतना आनन्द आता था। ईरान के चित्रकारों द्वारा बनाये गये लघुचित्रों की वह बड़ी प्रशंसा करते थे और बाद में बहुत से चित्रकारों को अपने साथ दिल्ली लाने में सफ़ल रहे। उन चित्रकारों में मीर सय्यद अली और अब्दुस–समद भी थे। इस प्रकार भारत में चित्रकारों को लघुचित्र बनाने की प्रेरणा मिली और यह परम्परा 'मुग़ल कला' कहलाई।

शब्द 'मुग़ल' की व्याख्या

कुछ शब्द अनुचित रूप में प्रयोग होते हैं। बाबर ने अपने आप को कभी मुग़ल नहीं कहा। वह स्वयं को तैमूरी कहते थे – अर्थात् तैमूर का वंशज, जो चौदहवीं शताब्दी ई. में मध्य एशिया का महान शासक था। भारत आने वाले पुर्तगाली व्यापारियों ने बाबर और उनके वंश को, और उनसे जुड़ी हुई सभी चीज़ों को जैसे खाना, कला एवं वास्तुकला को मुग़ल कहा, जो 'मंगोल' शब्द का रूपान्तर है।

भिश्ती ने हुमायूँ को कैसे बचाया

1539 में हुमायूँ बिहार में चौंसा के युद्ध में परास्त हो गये। जब उनकी सेना पीछे हट रही थी, बादशाह का घोड़ा फिसल कर गंगा नदी में गिर पड़ा। निज़ाम नामक एक भिश्ती नदी के तट पर खड़ा था। उसने बादशाह के साथ होने वाली घटना को देखा और जल्दी से अपनी चमड़े से बनी मश्क फुला कर नदी में डाल दी और हुमायूँ उसको पकड़ कर तट पर पहुचने मे सफल हुए। हुमायूँ इससे बहुत प्रभावित हुए और निज़ाम से कहा –"तुम ने मेरा जीवन बचाया। मैं तुम्हें वचन देता हुँ कि आगरा पहुँच कर तुम्हें एक दिन के लिये अपनी राजगद्दी पर बिठाऊँगा"।

भिश्ती ने झुक कर विनम्रता से कहा " मुझे कोई पुरस्कार न दें। आप सुरक्षित रहें, यही मेरी कामना थी"। परन्तु हुमायूँ अडिग रहे और कहा–" तुम ने अपने बादशाह के लिए इतना प्यार दिखाया है, तुम न केवल एक दिन के लिये मेरी राजगद्दी बल्कि इस लायक़ भी हो कि मैं तुम्हारा आभारी रहूँ"।

हुमायूँ ने अपना वचन निभाया। वह निज़ाम को आगरा ले गये, उसे एक दिन के लिये राजगद्दी पर बैठाया और बादशाह के अधिकार से पूरी तरह आनन्दित होने का अवसर दिया।

पानी पिलाना एक पुण्य का कार्य समझा जाता है। कहार या पानी ढोने वाले को "भिश्ती" कहा जाता है– अर्थात् वह व्यक्ति जो स्वर्ग या "बिहिश्त" का पात्र होता है।

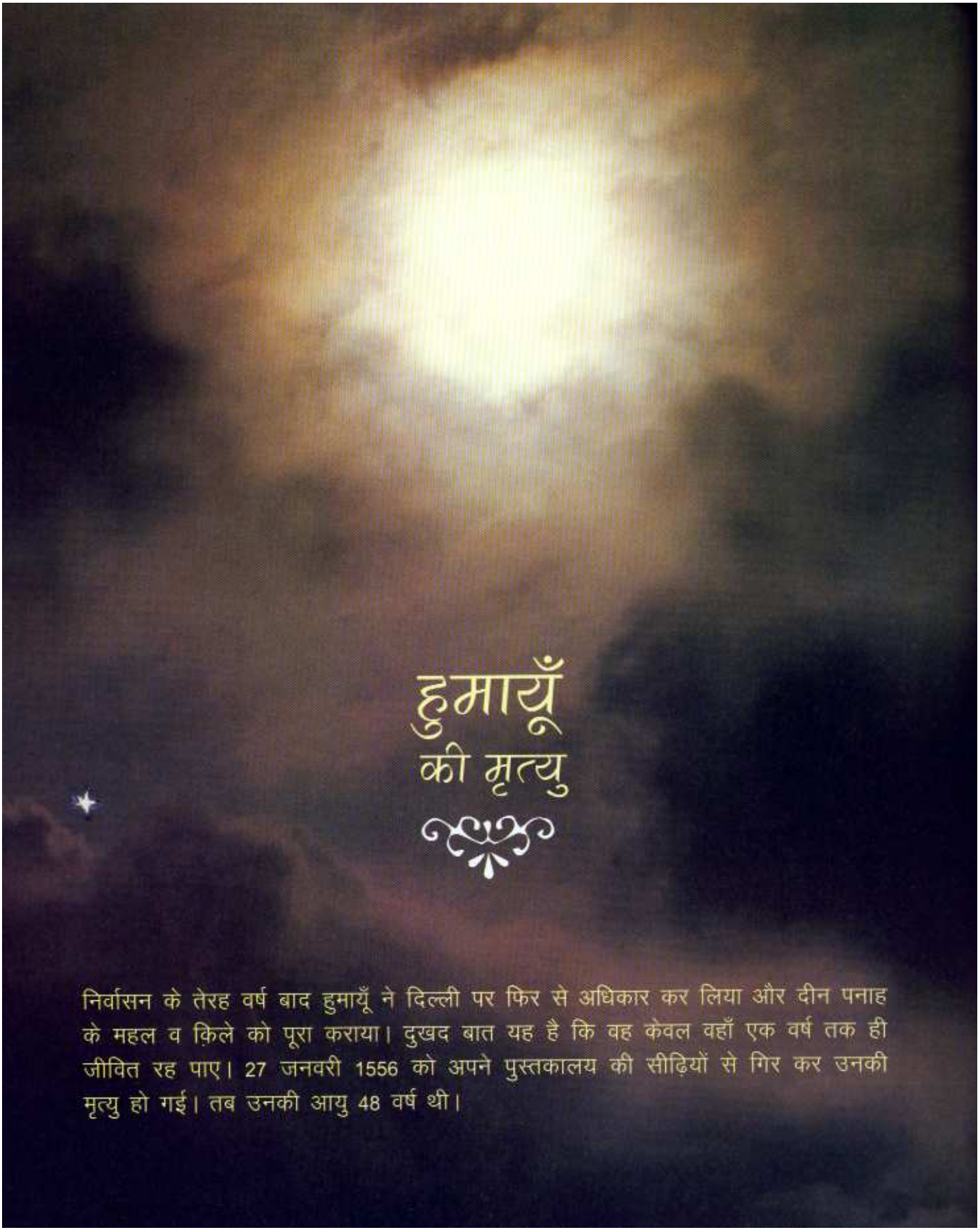

हुमायूँ की मृत्यु

निर्वासन के तेरह वर्ष बाद हुमायूँ ने दिल्ली पर फिर से अधिकार कर लिया और दीन पनाह के महल व क़िले को पूरा कराया। दुखद बात यह है कि वह केवल वहाँ एक वर्ष तक ही जीवित रह पाए। 27 जनवरी 1556 को अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर उनकी मृत्यु हो गई। तब उनकी आयु 48 वर्ष थी।

हाजी बेगम
कौन थी?

हुमायूँ का मक़बरा किसने बनाया?

मैंने पढ़ा है कि उनकी पत्नी ने बनवाया था, मगर कौन सी पत्नी ने? अकबर की माँ हमीदा बानो बेगम थीं और उनकी सौतेली माँ बेगा बेगम थीं।

शिलालेख से पता चलता है कि इसको हाजी बेगम ने बनवाया था। हाजी का मतलब होता है जिसने मक्का में स्थित तीर्थस्थल की यात्रा की हो। इन दोनों रानियों में से किसी एक ने ही बनवाया होगा।

कुछ भी हो, पैसा तो अकबर बादशाह ने ही दिया होगा। सोचो लीला, अकबर जब बादशाह बने जब वह तुम्हारी आयु के थे- तेरह वर्ष का!

मक़बरे की कल्पना

अकबर 1556 में तेरह वर्ष की आयु में बादशाह बने। जब उन्होंने अपने साम्राज्य को सुरक्षित कर लिया तब अपने पिता की स्मृति में एक विशाल मक़बरा बनाने की ओर ध्यान दिया। उनके निवेदन पर उनकी फूफी गुलबदन बेगम ने 'हुमायूँ नामा' लिखा जिसमें हुमायूँ के जीवन की कहानी थी।

वह हुमायूँ के लिये एक शानदार मक़बरा बनाना चाहते थे।
इस विषय में तीन बातें विचाराधीन थीं :
मक़बरा कहाँ बनाया जाये ?
इसका आर्किटेक्ट कौन होगा ?
इसका आकार कैसा होना चाहिये ?

पहले प्रश्न का उत्तर मुश्किल नहीं था। यह तय हुआ कि यह एक पवित्र क्षेत्र में हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह के पास होगा। यह स्थान दीन पनाह के भी करीब था।

आर्किटेक्ट के रूप में मिर्ज़ा मुहम्मद ग़यास का चुनाव हुआ जो ईरान के एक शहर हिरात, जो आज अफ़ग़ानिस्तान में है, का रहने वाला था। इस का नक़्शा ईरानी वास्तुकला से प्रभावित था और दिल्ली तथा अन्य किसी भी देश मे बने मक़बरे से बड़ा था।

अकबर चाहते थे कि मक़बरा एक चहार दीवारी बाग़ में बने जिसमें फूल और फल देने वाले पेड़ हों और बहता पानी हो। ऐसा बाग़ जो कुरान शरीफ़ में वर्णित स्वर्ग का रूप हो। फ़ारसी भाषा में दीवारों से घिरे ऐसे बाग़ के लिये 'फ़िरदौस' शब्द प्रयोग होता है। यही शब्द अंग्रेज़ी भाषा में 'पैरेडाइज़' हो गया।

मिर्ज़ा ग़्यास द्वारा बनाये गये मक़बरे के डिज़ाइन में ईरानी वास्तुकला की बारीकियाँ थीं जिसको बनाने के लिये भारत में उपलब्ध लाल पत्थर और सफ़ेद संगमरमर का भारी मात्रा में प्रयोग किया गया।

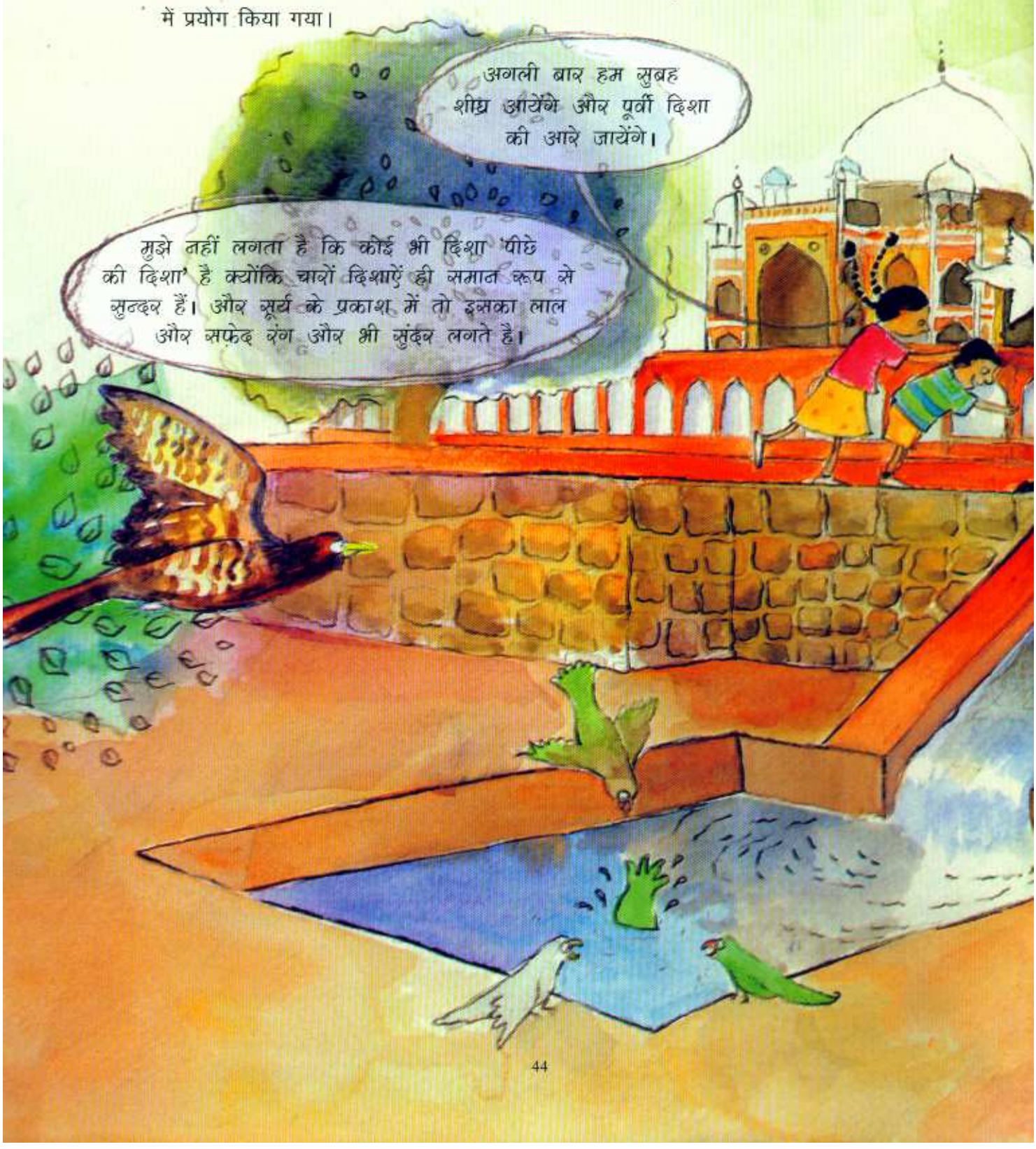

ज़मीन पर जन्नत

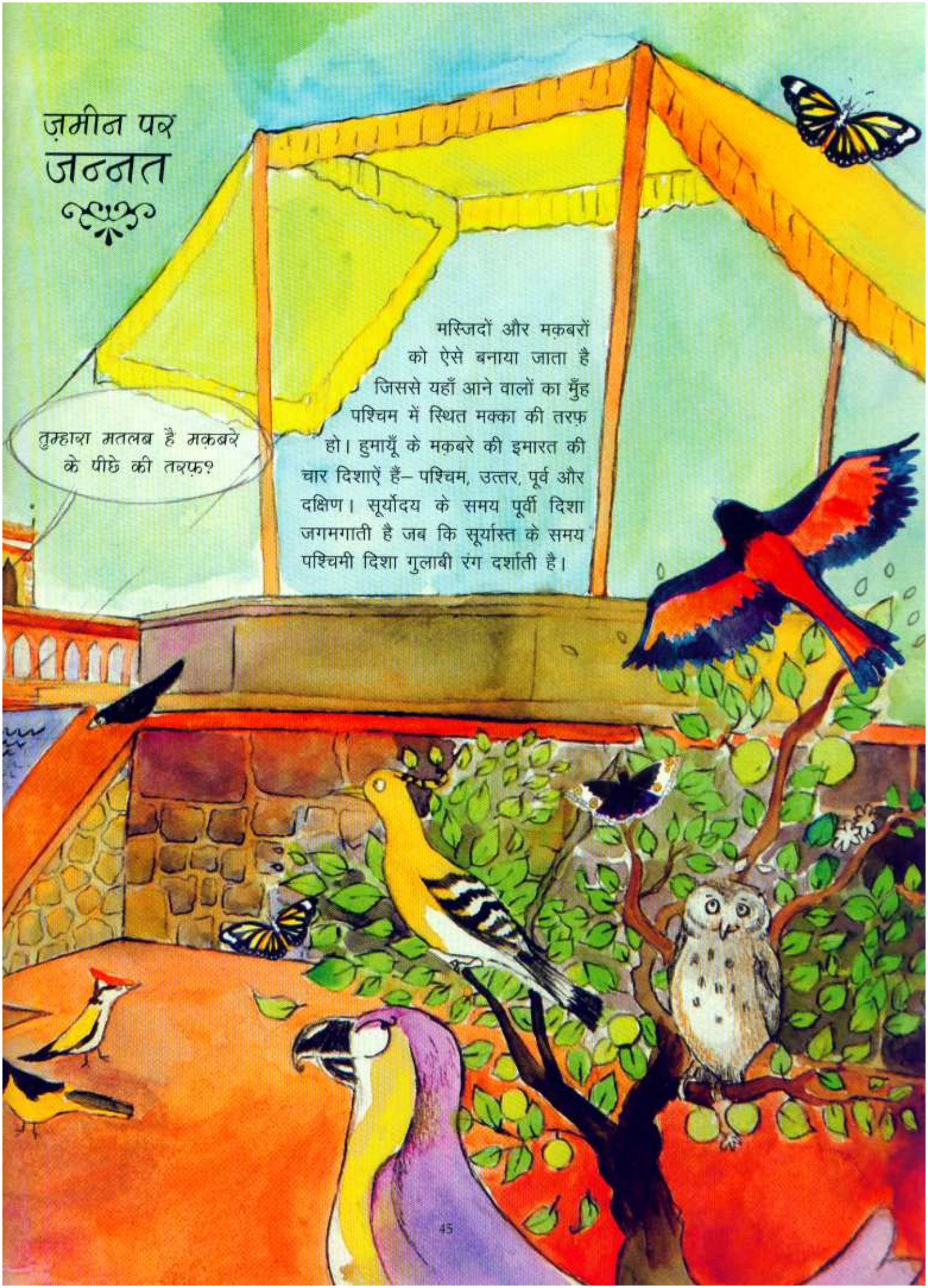

मस्जिदों और मक़बरों को ऐसे बनाया जाता है जिससे यहाँ आने वालों का मुँह पश्चिम में स्थित मक्का की तरफ़ हो। हुमायूँ के मक़बरे की इमारत की चार दिशाऐं हैं– पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण। सूर्योदय के समय पूर्वी दिशा जगमगाती है जब कि सूर्यास्त के समय पश्चिमी दिशा गुलाबी रंग दर्शाती है।

तुम्हारा मतलब है मक़बरे के पीछे की तरफ़?

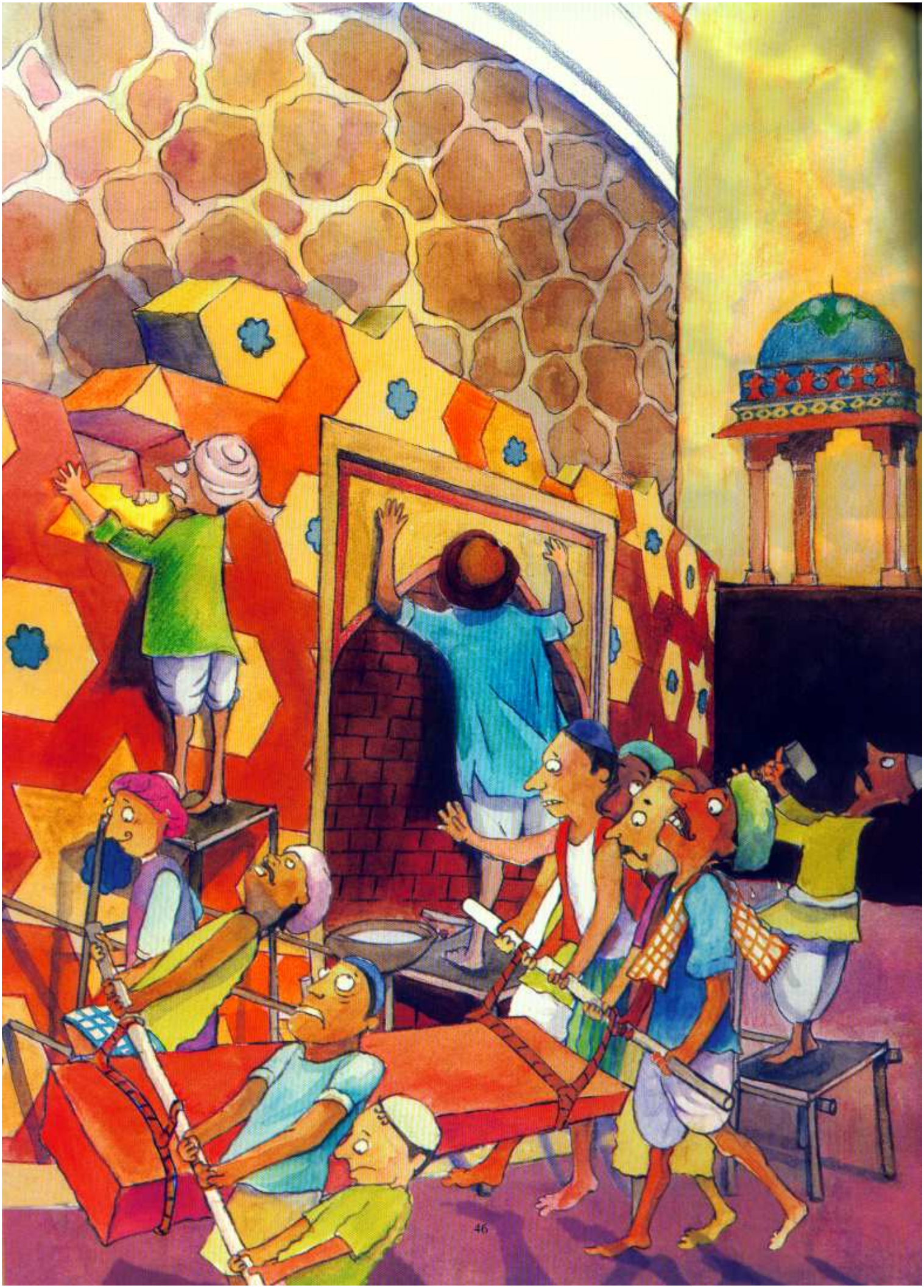

मक़बरे का निर्माण

हुमायूँ के मक़बरे की योजना बनाने से भी हज़ार साल पहले भारत में ईमारते बनाने के लिये पत्थर का प्रयोग होता था। इसका प्रयोग अलग–अलग प्रकार से होता था, जैसे–दीवारें बनाने के लिये ठोस पत्थरों के रूप में या ईंट–पत्थर से बनी इमारतों पर छत डालने के लिये पतली पट्टियाँ के रूप में।

अलग–अलग प्रकार के पत्थर दीवारों को अलग–अलग रंग व रूप देते हैं। उत्तरी भारत में गुलाबी, कम चमकदार लाल और पीले रंगों में बलुआ पत्थर इस्तमाल होता था, बल्कि आज भी होता है। दीवारें दिल्ली में उपलब्ध सलेटी बिल्लोरी पत्थर से बनी थीं। ये दीवारें आज के दौर में बनी दीवारों से बिल्कुल अलग थीं और 15 फ़ीट चौड़ी थीं।

मक़बरे के कक्ष की छत और दीवारों पर बनी छतरियाँ नीले, हरे, सफ़ेद और पीले टाइलों से ढकी थीं – ऐसे टाइलों से जैसे मध्य एशिया में बनाये जाते हैं।

गुम्बद सफ़ेद संगमरमर से ढका था जिसे 400 मील दूर राजस्थान से बैलगाड़ियों पर लाद कर लाया गया था।

मक़बरा सात साल में तैयार हुआ (1565–72) और इस पर 15 लाख रूपये रुपये ख़र्च हुए। आज इस मक़बरे को बनाने में 1500 करोड़ रूपये से भी अधिक ख़र्च होंगे।

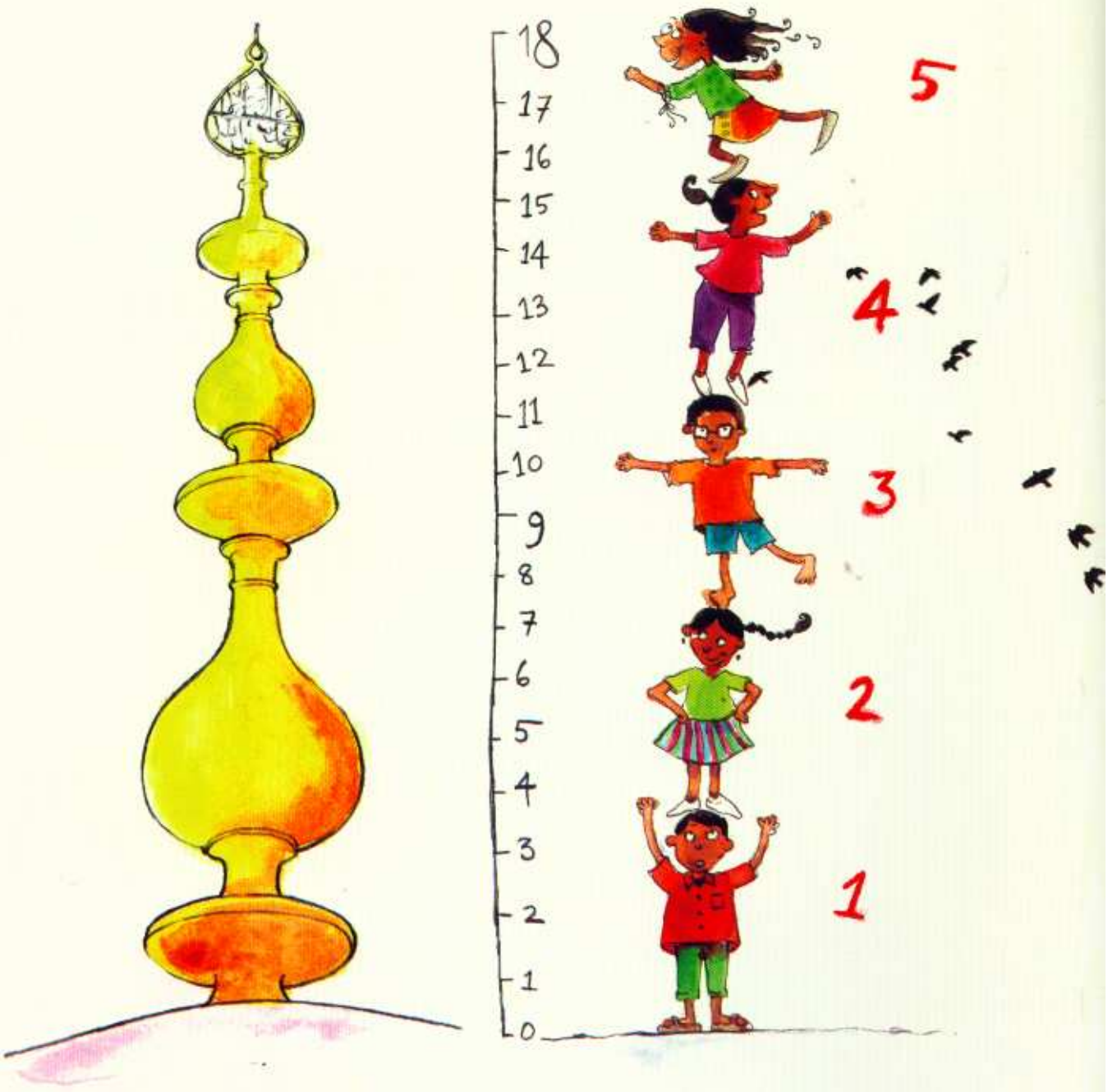

हुमायूँ का मक़बरा 140 फ़ीट ऊँचा है जो एक 14 मंज़िली इमारत के बराबर है। और गुम्बद के ऊपर बना सुनहरा कलश 18 फ़ीट ऊँचा है जो दो मंज़िला मकान के बराबर है।

फिर भी देखने में यह इमारत इतनी 'विशाल' नहीं लगती क्योंकि छोटे बड़े अनेक महराब इतनी कुशलता से बनाए गए हैं जिससे देखने वालों को यह इमारत संतुलित लगती है।

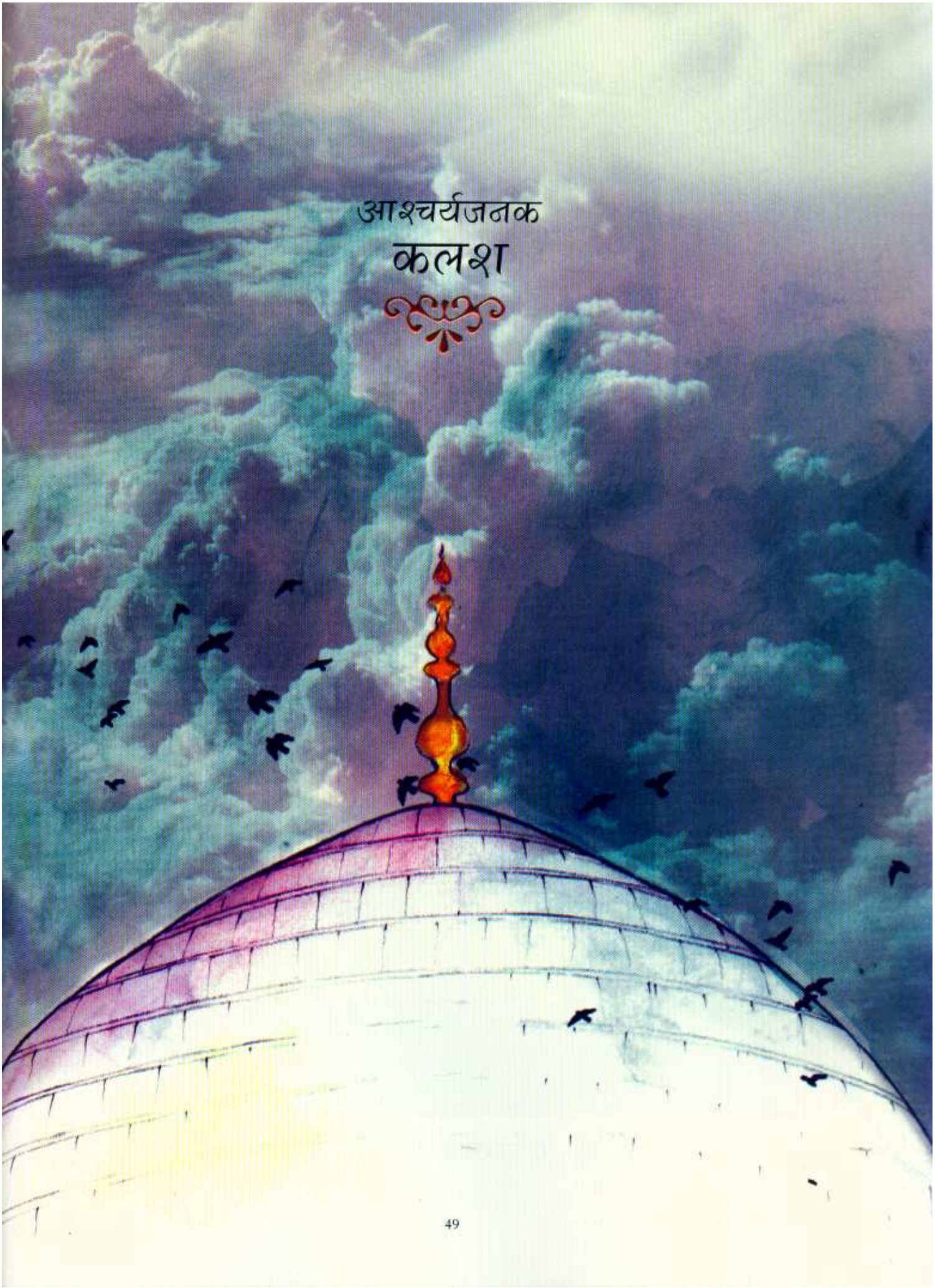
आश्चर्यजनक
कलश

हुमायूँ के मक़बरे के व्यापक अंश

विशाल दोहरा-गुम्बद

गुम्बद इमारत को दो गुनी ऊँचाई प्रदान करता है। गुम्बद की गर्दन, जिस पर दो रंगों के बलुआ पत्थर से सुन्दर आकृतियाँ बनी हैं, छत पर बने मंडपों और छतरियों के पीछे छुपी है।

जब बाग़ीचे में खड़े होकर मक़बरे को देखें तो गुम्बद बहुत ऊँचा लगता है। परन्तु जब अन्दर केन्द्रीय कक्ष में खड़े होकर ऊपर की ओर देखें तो यह छोटा लगता है। क्यों?

यह इस लिये, कि यहाँ दो गुम्बद हैं, एक के अन्दर एक जैसे एक छोटा प्याला एक बड़े प्याले में रखा हो। बाहरी गुम्बद इमारत को विशाल रूप देता है। अन्दर छोटा गुम्बद आवाज़ को साफ़ सुनने में सहायता करता है। पुराने समय में कक्ष के अन्दर कुरान शरीफ़ की आयतें पढ़ी जाती थीं। पढ़े जाने वाले शब्द अगर ऊपर बड़े गुम्बद की ओर जाते तो वे साफ़ सुनाई न पड़ते और समझ में न आते।

मक़बरे की ख़ूबसूरती

आर्किटेक्ट मिर्ज़ा ग़्यास ने दो विपरीत रंगों अर्थात् लाल पत्थर और सफ़ेद संगमरमर का बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया। इमारत को बड़ी सावधानीपूर्वक चूने के प्लास्टर और चीनी मिट्टी की टाइलों से सजाया गया।

इस्लाम में मनुष्य तथा जीव–जन्तुओं के चित्र बनाने की मनाही है, इस लिये सजावट के लिये रेखाकृतिओं और फूल–पत्तियों की आकृतिओं का प्रयोग किया गया है। बहुत से देशों में इस्लामी इमारतों में हमें षटभुजीय तारा सजावट हेतु प्रयोग होता दिखाई पड़ता है। हुमायूँ के मक़बरे में मुख्य महराबों के ऊपर बने तारों पर बीच में संगमरमर के उभरे हुए कमल बने हैं। मुख्य कक्ष के प्रवेश–द्वार की अन्दरूनी छत पर रंगीन प्लास्तर में ताड़ के पेड़ की पत्तियों के नमूने बनाये गये है।

षटभुजीय तारा

कंगूरा, सजावटी पट्टी

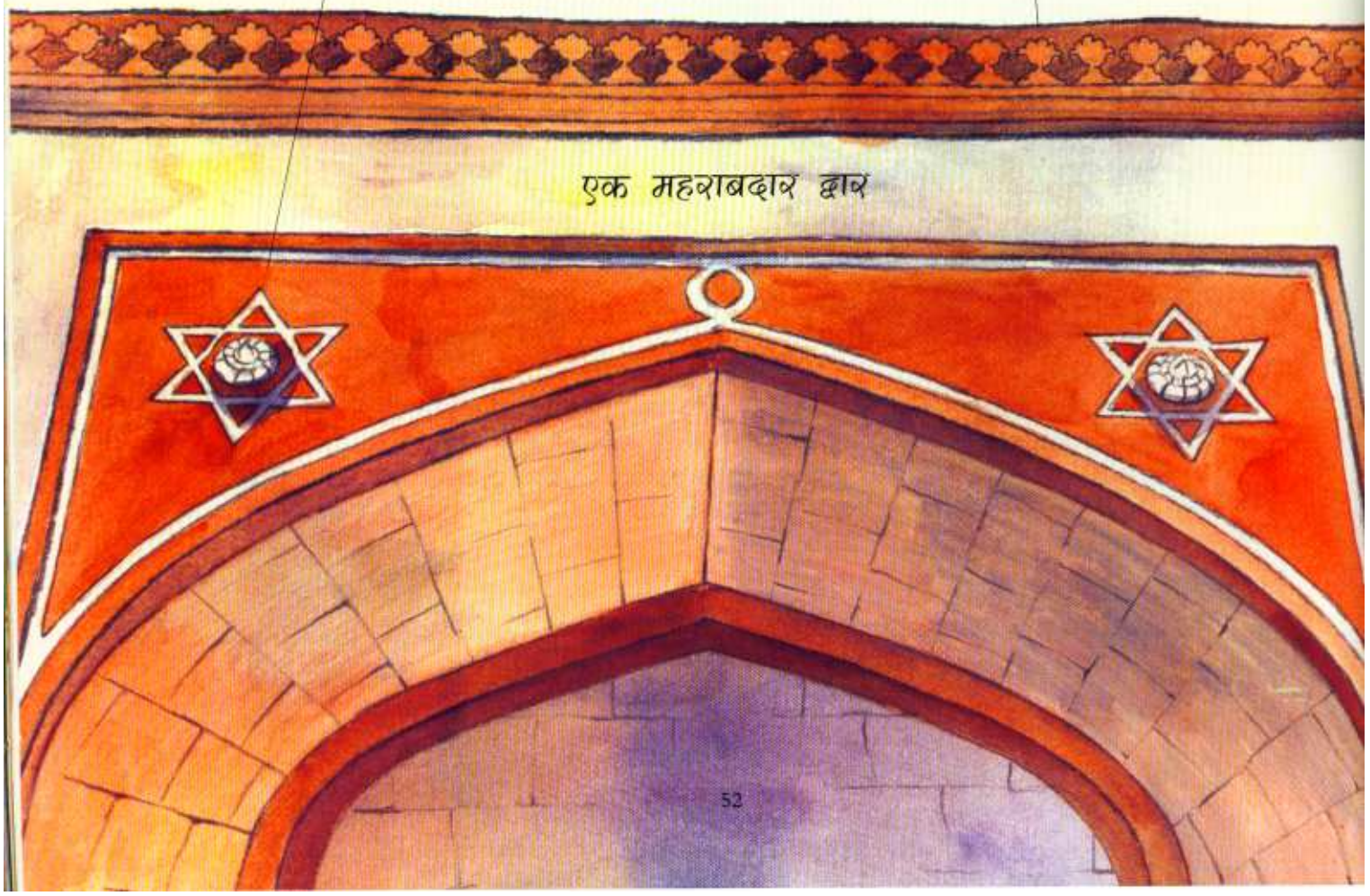

एक महराबदार द्वार

गुलदस्ता, फूलों

मक़बरे में प्रवेश करते ही पहले कमरे में अन्दर छत पर सजावट वाला रंगीन प्लास्टर आज भी बचा है।

गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा

हुमायूँ की क़ब्र

क्योंकि मृत शरीर को हमेशा भूमि के निचे दफ़न किया जाता है, इसलिये हुमायूँ की क़ब्र मक़बरे के निचले तल पर है। देखने वाले को जो बाहर कमरे में दिखाई पड़ता है वह असली क़ब्र के ठीक ऊपर संगमरमर में बना क़ब्र का चिन्ह है।

मक़बरे का मुख्य कक्ष ऊपर नक़्क़ाशीदार जालियों से आने वाली हल्की रौशनी से प्रकाशमय रहता है। यह जालियाँ फ़र्श पर एक आकृति भी बनाती हैं। जालियों से होकर हल्की हल्की हवा भी अन्दर आती है जिससे गर्मियों में कमरा ठंडा रहता है।

यदि हम कल्पना करें कि मक़बरे का मुख्य कक्ष एक गुफ़ा है, और जाली मकड़ी का जाला है, तो इस से हमें क़ुरान शरीफ में लिखी एक घटना की याद आती है:

पैग़म्बर मुहम्मद और उनके साथी अबु बक़्र जब मक्का से मदीना की यात्रा कर रहे थे तो उन पर हमला हुआ। जल्दी से उन्होंने एक गुफ़ा में शरण ली, और जब वे अन्दर थे, एक मकड़ी ने गुफ़ा के द्वार पर एक जाला बुन दिया।

जब उनके शत्रु द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने मकड़ी का जाला देखा और सोचा कि कोई गुफ़ा के अन्दर नहीं गया होगा। वे पैग़म्बर मुहम्मद और अबु बक़्र को कोई नुक़सान पहुँचाये बिना वापस लौट गये।

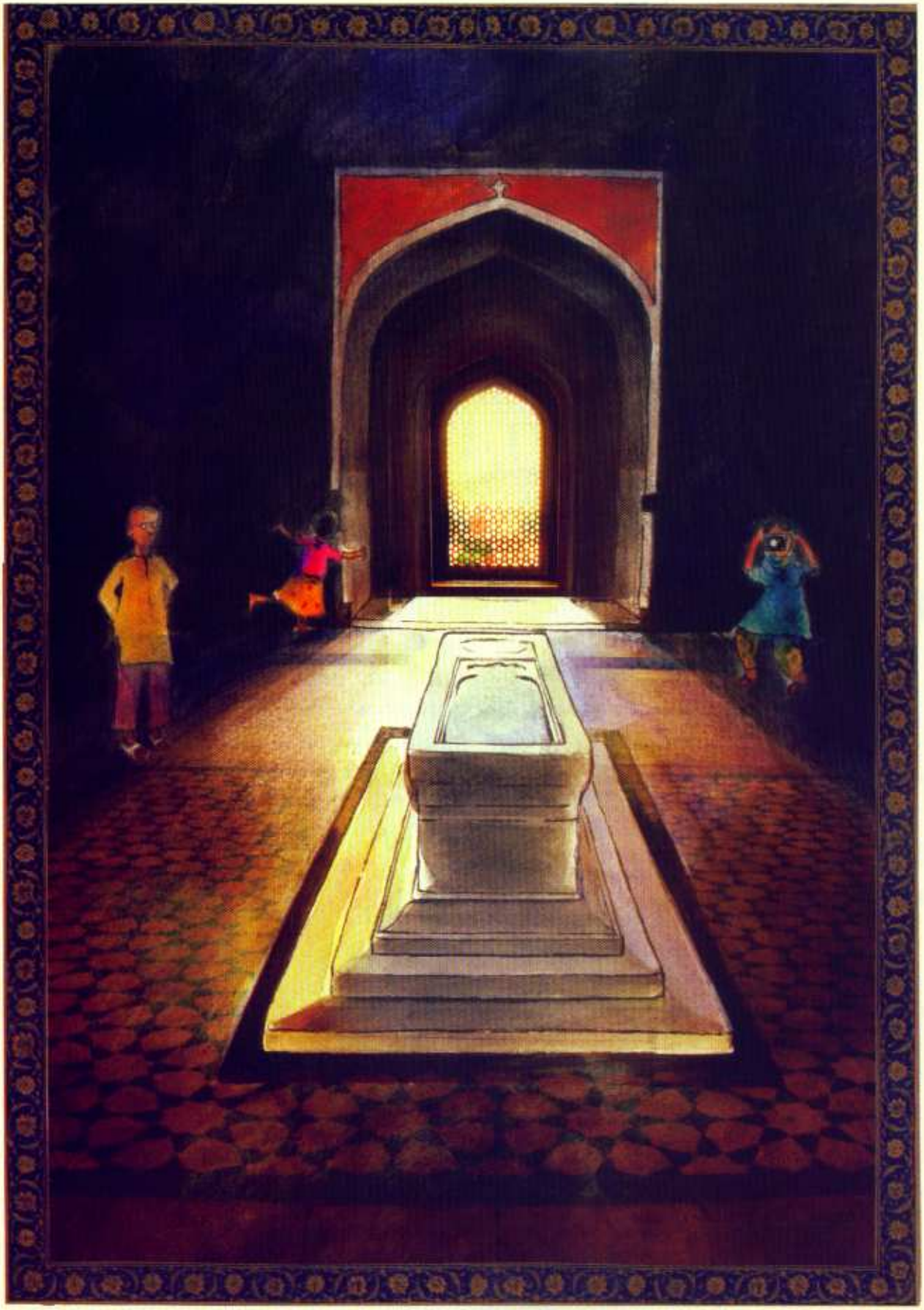

क्रोनोग्राम

प्रयोग

बहुत से मक़बरों में क़ुरान की आयतों पर आधारित लेख हैं,
परन्तु यह पता नहीं चलता कि ये मक़बरे किस के हैं।

कुछ क़ब्रों के चिन्ह के ऊपर छोटे–छोटे लेख हैं जिस पर मृत व्यक्ति की मृत्यु की तिथि दर्ज है– ऐसे लेख को "क्रोनोग्राम" (समय निश्चित करने का लेख) कहते हैं।

चार भाषाओं –लातीनी, इबरानी, अरबी और फ़ारसी में
हर एक अक्षर का संख्या रूपी मूल्य होता है।
अरबी के 28 अक्षरों का मूल्य निम्न प्रकार है –

अलिफ़= अ	1	ا	ये= य	10	ي	क़ाफ़= क़	100	ق
बे= ब	2	ب	काफ़= क	20	ك	रे= र	200	ر
जीम= ज	3	ج	लाम= ल	30	ل	शीन= श	300	ش
दाल= द	4	د	मीम= म	40	م	ते= त	400	ت
हे= ह	5	ه	नून= न	50	ن	से= स	500	ث
वाओ= व/य	6	و	सीन= स	60	س	ख़े= ख़	600	خ
ज़े= ज़ा	7	ز	ऐन= अ	70	ع	ज़ाल= ज़	700	ذ
हे= ह	8	ح	फ़े= फ़	80	ف	ज़्वाद= द	800	ض
तोएं= त	9	ط	स्वाद= स	90	ص	ज़ोएं= ज़े	900	ظ
						ग़ैन= ग	1000	غ

आप किसी भी वाक्य के अक्षरों के मूल्य को जोड़ कर एक संख्या निकाल सकते हैं। एक चतुर लेखक कोई वाक्य इस प्रकार लिखता है कि सभी अक्षरों के मूल्य को जोड़ कर एक संख्या निकलती है जो वास्तव में कोई तिथि होती है।

हुमायूँ की क़ब्र के ऊपर पत्थर पर कोई लेख नहीं है।

काही नामक कवि ने फ़ारसी में एक वाक्य बनाया
जिससे उसकी मृत्यु की तिथि का पता चल जाता है।

همایون پادشاه از بام افتاد

हुमायूँ पादशाह अज़ बाम उफ़ताद
अर्थात हुमायूँ बादशाह छत से गिर पड़ा।

आइये इस वाक्य में प्रयोग होने वाले अक्षरों का मूल्य तय करें :

हुमायूँ	पादशाह	अज़	बाम	उफ़ताद
ह=5	ब=2	अ=1	ब=2	अ=1
म=40	अ=1	ज़=7	अ=1	फ़=80
अ=1	द=4		म=40	त=400
य=10	श=300			अ=1
ऊ=6	अ=1			द=4
न=50	ह=5			
112	313	8	43	486

कुल सख्या = 962

962 हिजरी (इस्लामी केलेण्डर) = 1554/5 ईस्वी.
इस वर्ष हुमायूँ की मृत्यु हुई।

मक़बरे का नक़्शा

मक़बरा 18 फ़ीट ऊँची दीवार से घिरे एक विशाल बाग़ीचे के बीच में बनाया गया है। बाग़ीचे का नक़्शा ईरान की 'चहार बाग़' परम्परा से प्रेरणा लेकर बनाया गया है। पानी के स्रोत क़ुरान शरीफ़ में वर्णित स्वर्ग की चार नदियों का प्रतिरूप हैं।

मक़बरे की तरह ही चौकोर बाग़ीचे काफ़ी विशाल हैं पर इतने विशाल दिखाई नहीं पड़ते। वह इस लिये कि इनको 32 चौकोर ख़ानों में विभाजित किया गया है जिसमें से चार हिस्सों में मक़बरा बना है।

चौकोर भागों के बीच में पगडण्डियाँ बनी हैं। इन चार बड़े रास्तों के बीच में, साथ–साथ चलते हुये साफ़ पानी की नालियाँ हैं। इसलिये साल के सब से गरम महीनों में भी पानी की इन नालियों और फ़व्वारों से बाग़ीचा ठंडा रहता है।

जहाँ पर ये नालियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं, वहाँ चबूतरे बने हैं। यहाँ पर सैर करने वालों के लिये तम्बू लगाये जाते थे। चारों तरफ़ बहता पानी वातावरण को प्राकृतिक रूप से ठंडा रखता था।

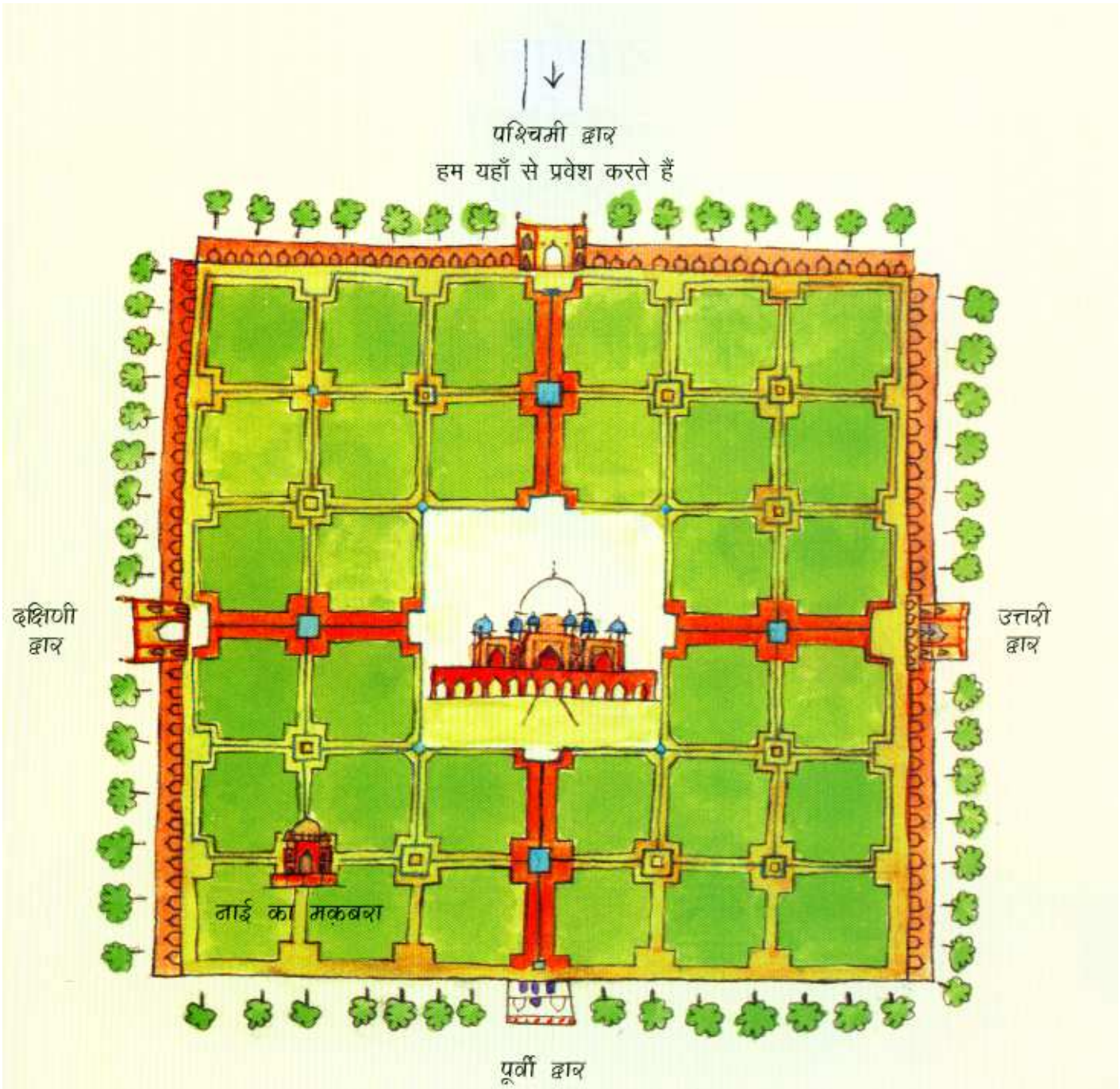

यमुना नदी यहाँ बहती थी।

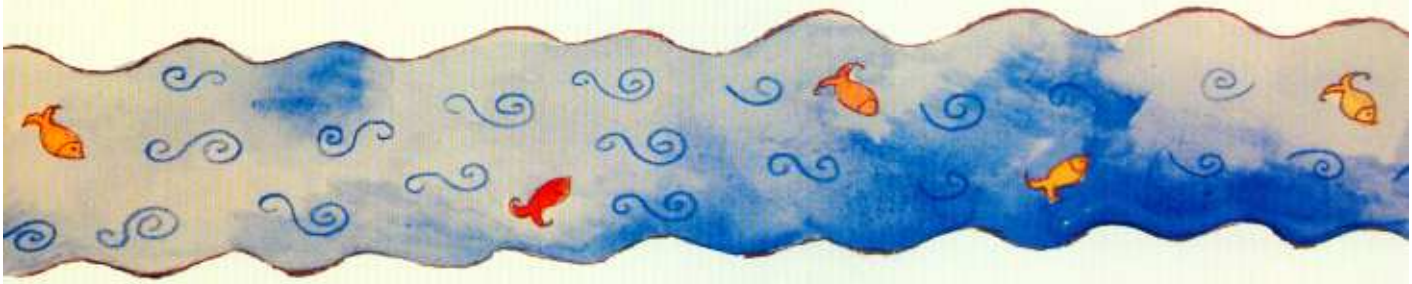

बाग़ीचा -ग़ालीचा

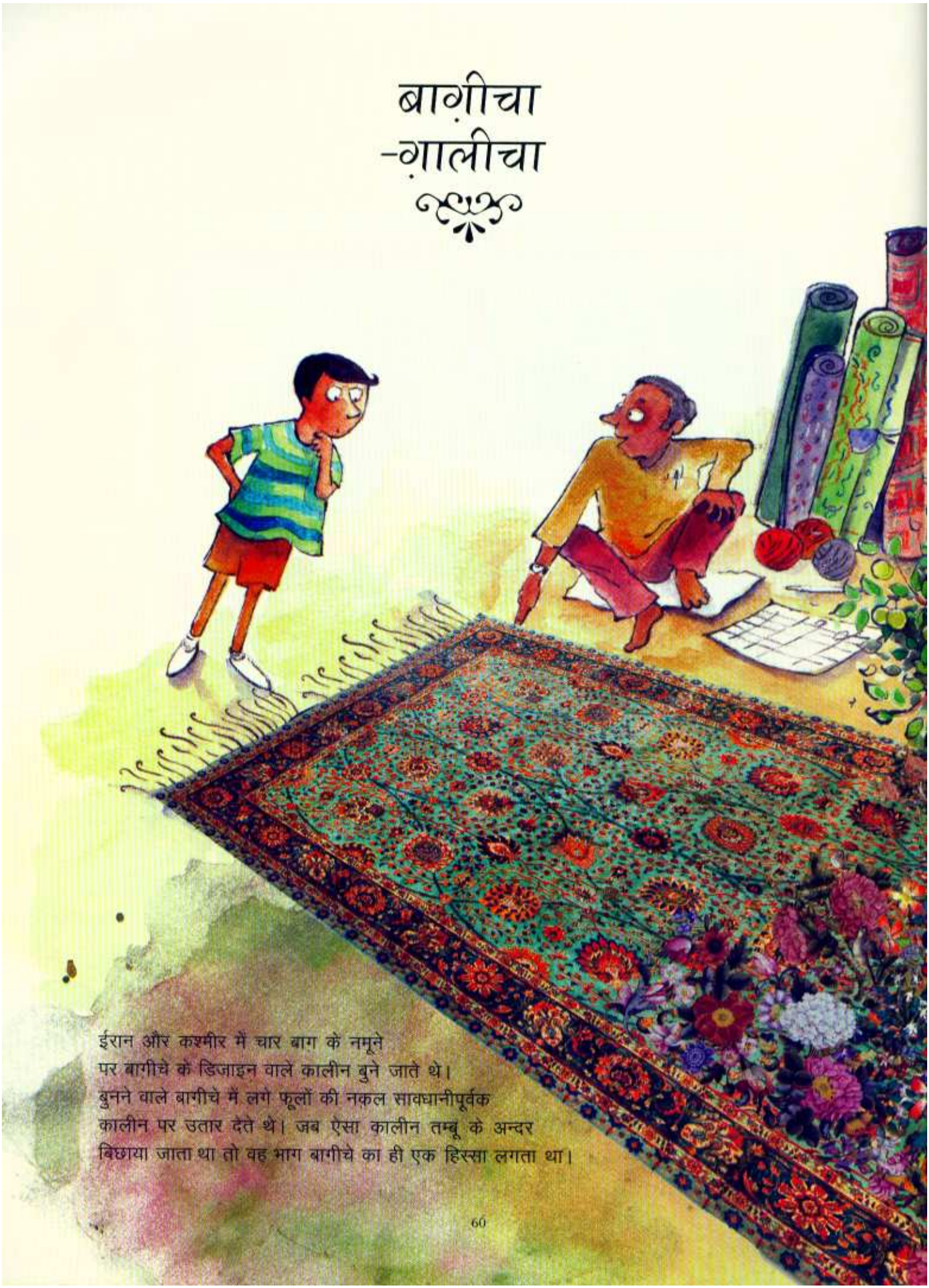

ईरान और कश्मीर में चार बाग के नमूने
पर बागीचे के डिजाइन वाले कालीन बुने जाते थे।
बुनने वाले बागीचे में लगे फूलों की नकल सावधानीपूर्वक
कालीन पर उतार देते थे। जब ऐसा कालीन तम्बू के अन्दर
बिछाया जाता था तो वह भाग बागीचे का ही एक हिस्सा लगता था।

इतिहासकारों ने लिखा है कि
हुमायूँ के मक़बरे में नारंगी, नींबू,
अनार, गुड़हल, नीम और आम
के पेड़ लगाये गये थे।

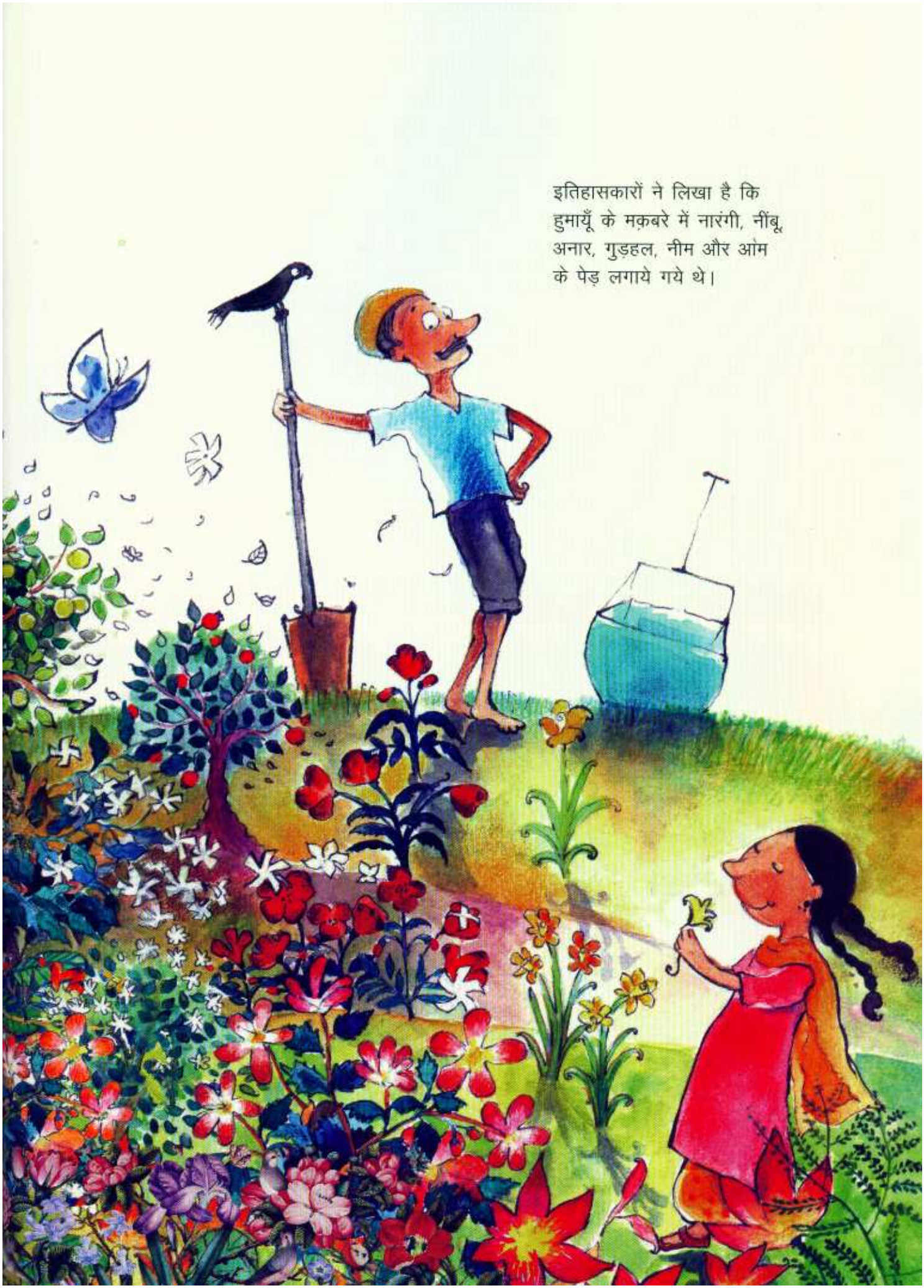

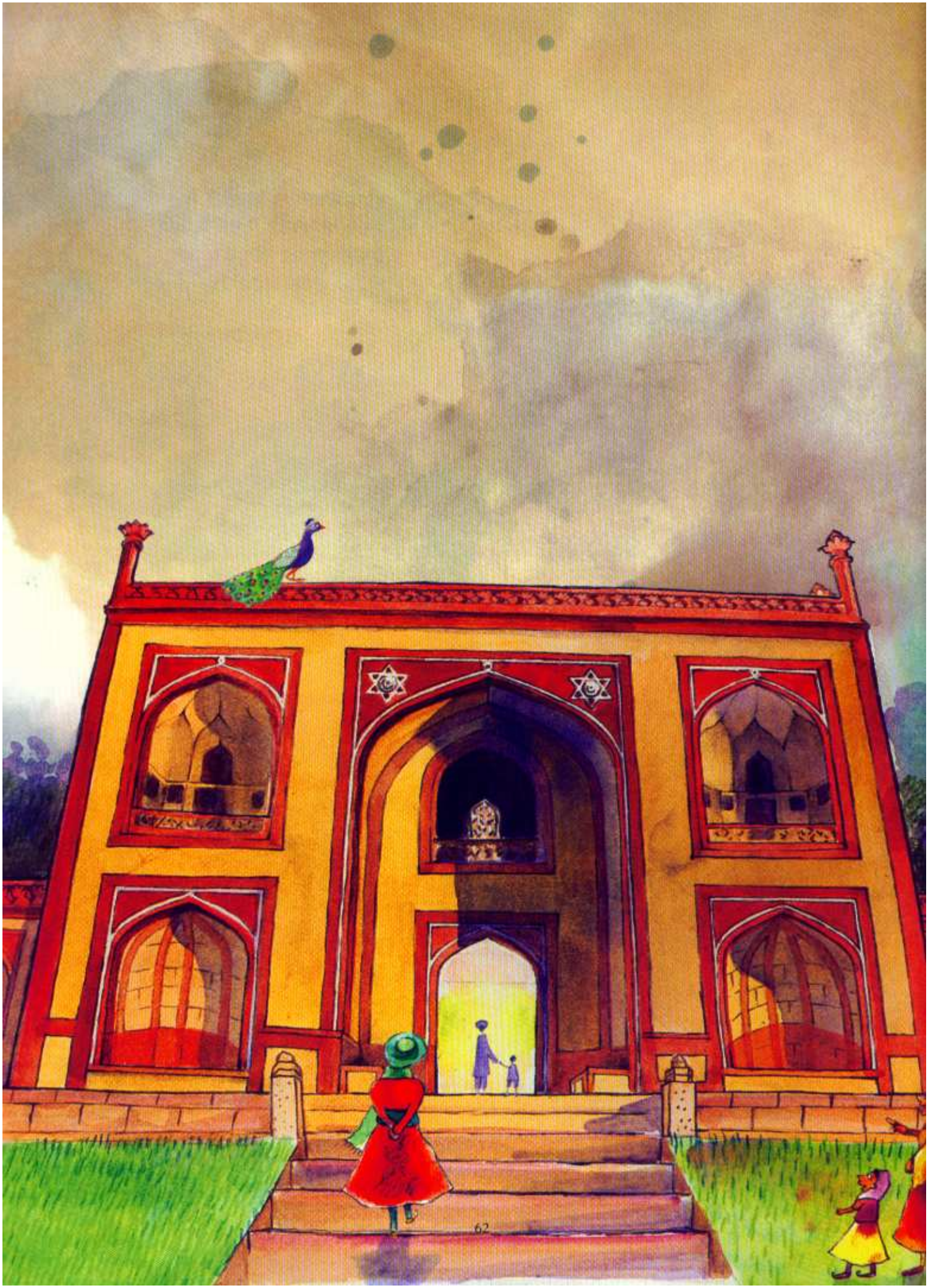

दक्षिणी द्वार

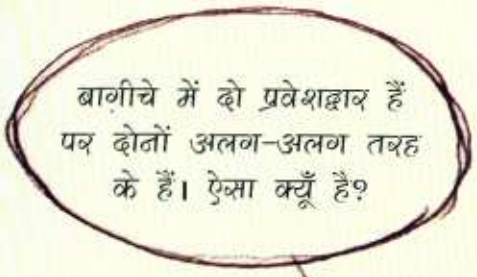

दक्षिण की तरफ़ का प्रवेशद्वार जो शाही परिवार के लोगों द्वारा इस्तमाल होता था, पश्चिम की ओर बने प्रवेशद्वार से चौड़ा और ऊँचा है।

पूर्व की ओर प्रवेशद्वार के स्थान पर एक मंडप है जहाँ यमुना से आने वाली ठंडी हवा का आनन्द लिया जा सकता था। उत्तरी दिशा में भी एक मंडप है जहाँ पर दीवार से बाहर बने एक कुँवें से पानी खींच कर बाग़ीचे में लाया जाता था।

बाग़ीचे की दीवार को नीचा बनाया गया था जिससे सैर के लिये आने वाले मक़बरे के चबूतरे पर खड़े होकर नदी को देख सकते थे।

आजकल हम नदी को नहीं देख सकते क्योंकि नदी ने अपना रास्ता बदल दिया है और अब यह पूर्व की ओर थोड़ा खिसक कर बह रही है।

एक मुसाफ़िर का अनुभव

अकबर किसी भी शहर में स्थाई रूप से नहीं रहे। वह कई महीनों तक लाहौर और आगरा में रहे और काफ़ी समय अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों की यात्रा में बिताया। कई बार उन्होंने अपने पिता के मक़बरे और हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह के दर्शन के लिये दिल्ली की यात्रा की।

एक इतिहासकार ने लिखा है:

1578 में अकबर सुल्तानपुर खिज़्राबाद से यात्रा के लिये निकला। शिविर और सैनिक ज़मीन के रास्ते से गए और वह खुद दरिया के रास्ते से पाँच दिनों की यात्रा कर दिल्ली पहुँचें। उन्होनें हुमायूँ के मक़बरे के दर्शन किये और नाव पर वापस लौट गये। तीस वर्ष बाद एक अंग्रेज़ यात्री विलियम फ़िंच ने मक़बरे के केन्द्रीय कक्ष का वर्णन इस प्रकार किया है:

एक विशाल कमरा जिसमें बहुमूल्य क़ालीन बिछे थे, मक़बरा एक उत्तम सफ़ेद चादर से ढका था जिसके ऊपर एक क़ीमती शामियाना तना था और सामने एक छोटी मेज़ पर किताबें रखी थीं, साथ ही बादशाह की तलवार, पगड़ी और जूते भी रखे थे।

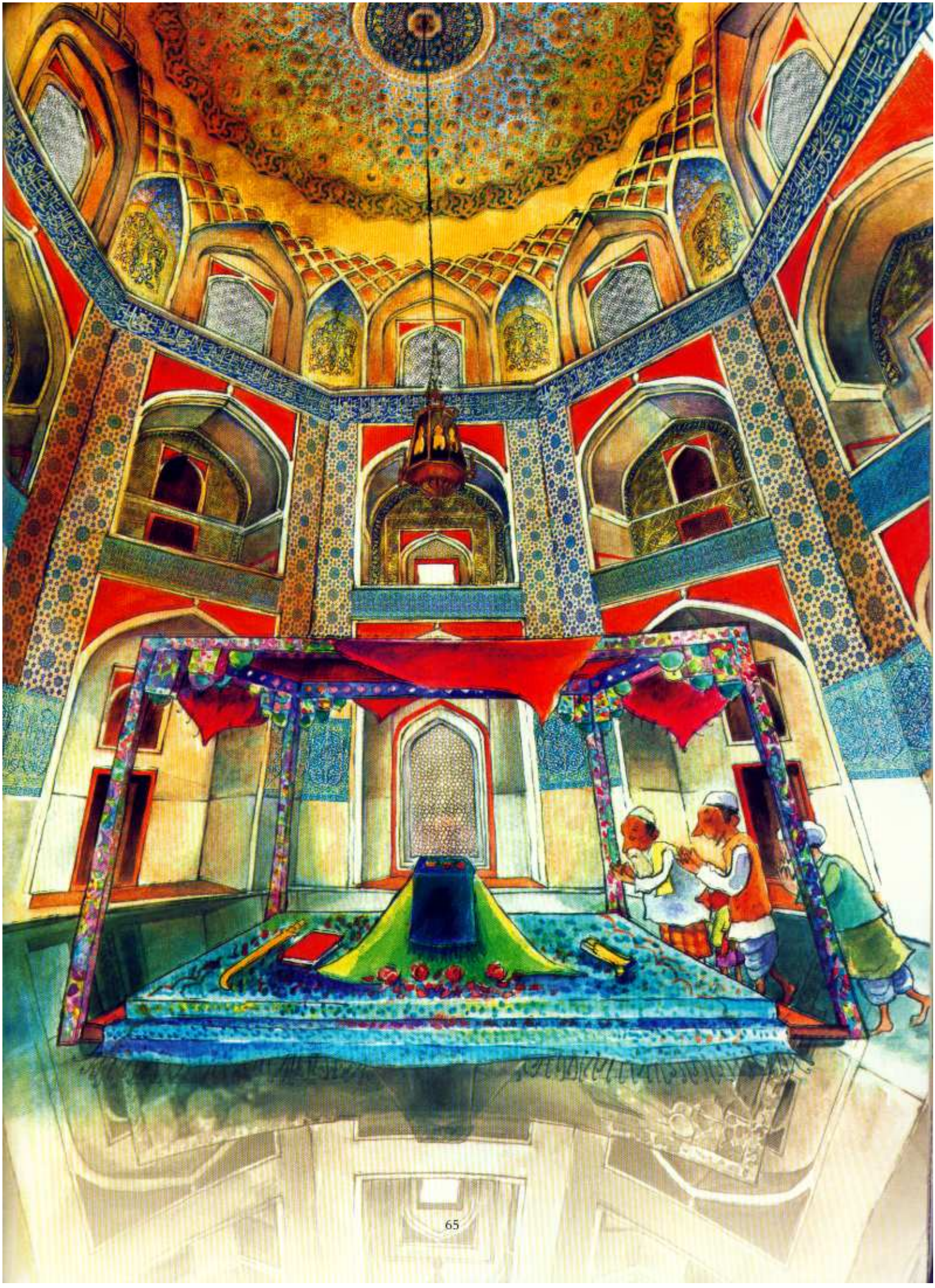

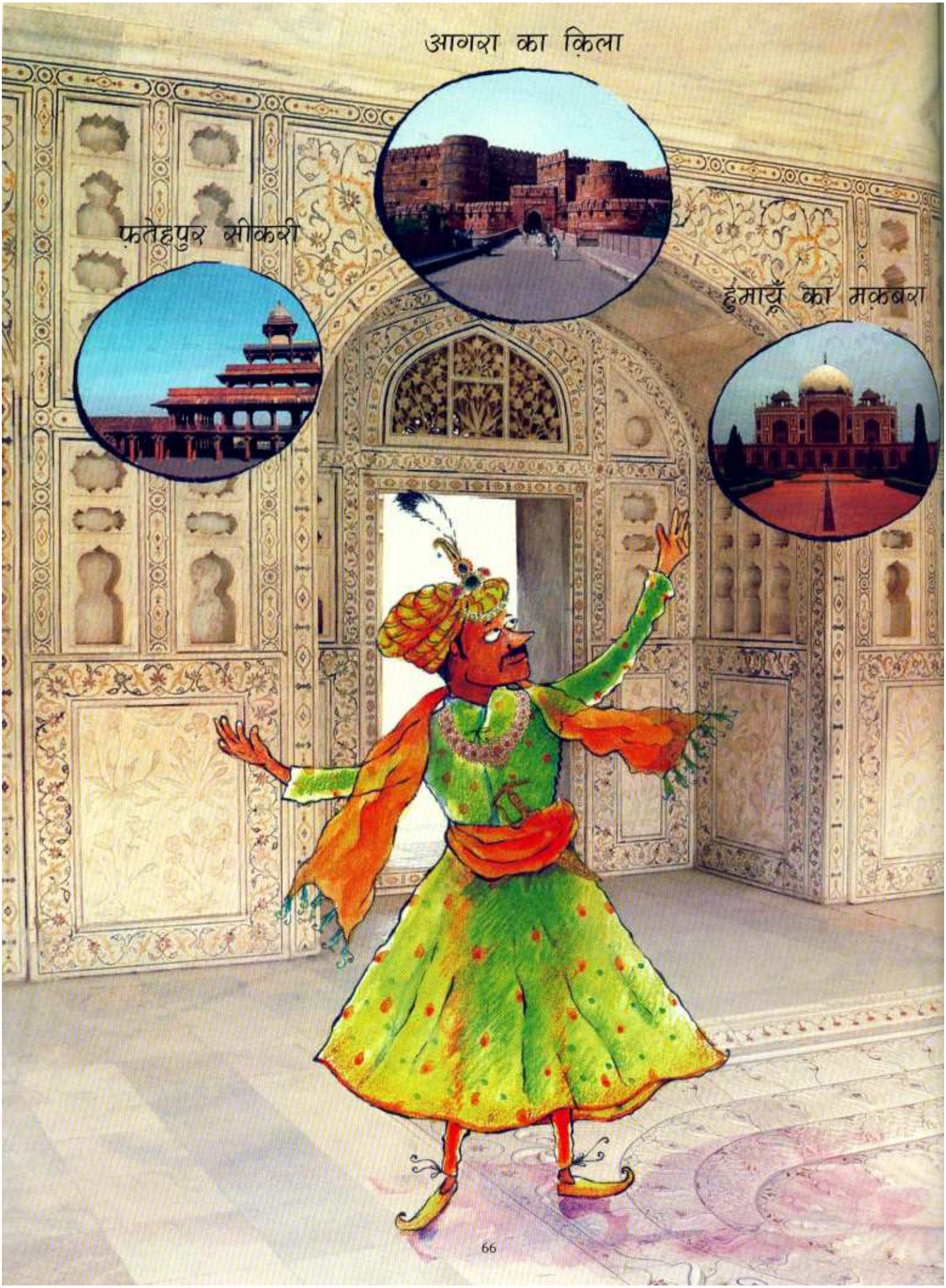
आगरा का क़िला
फ़तेहपुर सीकरी
हुमायूँ का मक़बरा

शाही इमारतें

हुमायूँ का मक़बरा अकबर के शासन काल में बनी बहुत सी इमारतों में से एक है। आगरा का विशाल क़िला तथा एक अन्य सूफ़ी संत सलीम चिश्ती, जिनसे अकबर को बड़ी श्रद्धा थी की दरगाह के साथ बसा फ़तेहपुर सीकरी, अकबर की दो अन्य प्रमुख योजनाऐं थीं।

अकबर के पोते बादशाह शाहजहाँ की पत्नी मुमताज़ महल की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने उनकी याद मे एक मक़बरा बनवाया जो ताज महल के नाम से मशहूर है।

आप देख सकते हैं कि इस को कुछ सीमा तक हुमायूँ के मक़बरे के नमूने पर बनाया गया है।

बाबर की तरह बाग़–बाग़ीचों से प्रेम उसके वंशजों को भी था। श्रीनगर में अकबर ने नसीम बाग़ बनवाया (नसीम का अर्थ है ठंडी सुहावनी हवा), उनके पुत्र जहाँगीर ने शालीमार (आनन्द का स्थान) बनवाया; जब कि शाहजहाँ ने निशात बाग़ बनवाया (निशात का अर्थ है आनन्द, हर्ष, या स्फूर्ति)।

उजड़ी हुई दिल्ली

जब आगरा लम्बे समय तक बादशाहों का मुख्य शहर रहा तो देहली के पुराने शहर जैसे लालकोट, सीरी, तुग़लक़ाबाद और फ़िरोज़शाह कोटला, वीरान हो गये। किसानों ने ख़ाली पड़े मैदानों में फ़सलें बोना शुरू कर दिया और इमारतों में जानवर बाँधने लगे।

1648 के बाद शाहजहाँ ने हुमायूँ के दीन पनाह के उत्तर की दिशा में एक शहर बसाया। इसको शाहजहानाबाद का नाम दिया गया। इस शहर के बाहर का दक्षिणी हिस्सा 'जंगल बाहर' (अर्थात् दीवार के बाहर का जंगल) या 'खंडरात कलाँ' (बड़े–बड़े खंडहर या विशाल खंडहर) के नाम से जाना गया।

कुछ भी हो दो जगहें कभी नहीं उजड़ीं–महरोली (क़ुतुबुद्दीन बाख़्तियार काकी की दरगाह के पास) और बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन। लगातार देखभाल होने के कारण हुमायूँ का मक़बरा 'विशाल खंडहर' नहीं बना। बादशाह बराबर आते रहते थे और बाग़ीचे में तंबुओं के मण्डप में रुकते थे। वे दान देते थे, वहाँ ग़रीबों को खाना दिया जाता था और यह जगह एक मदरसे (पाठशाला) के रूप में इस्तमाल होती थी।

दरगाह के पास दफ़न होने को भाग्यशाली माना जाता है और हुमायूँ के मक़बरे के अन्दर शाही परिवार के 160 से भी अधिक सदस्यों की क़ब्रें हैं।

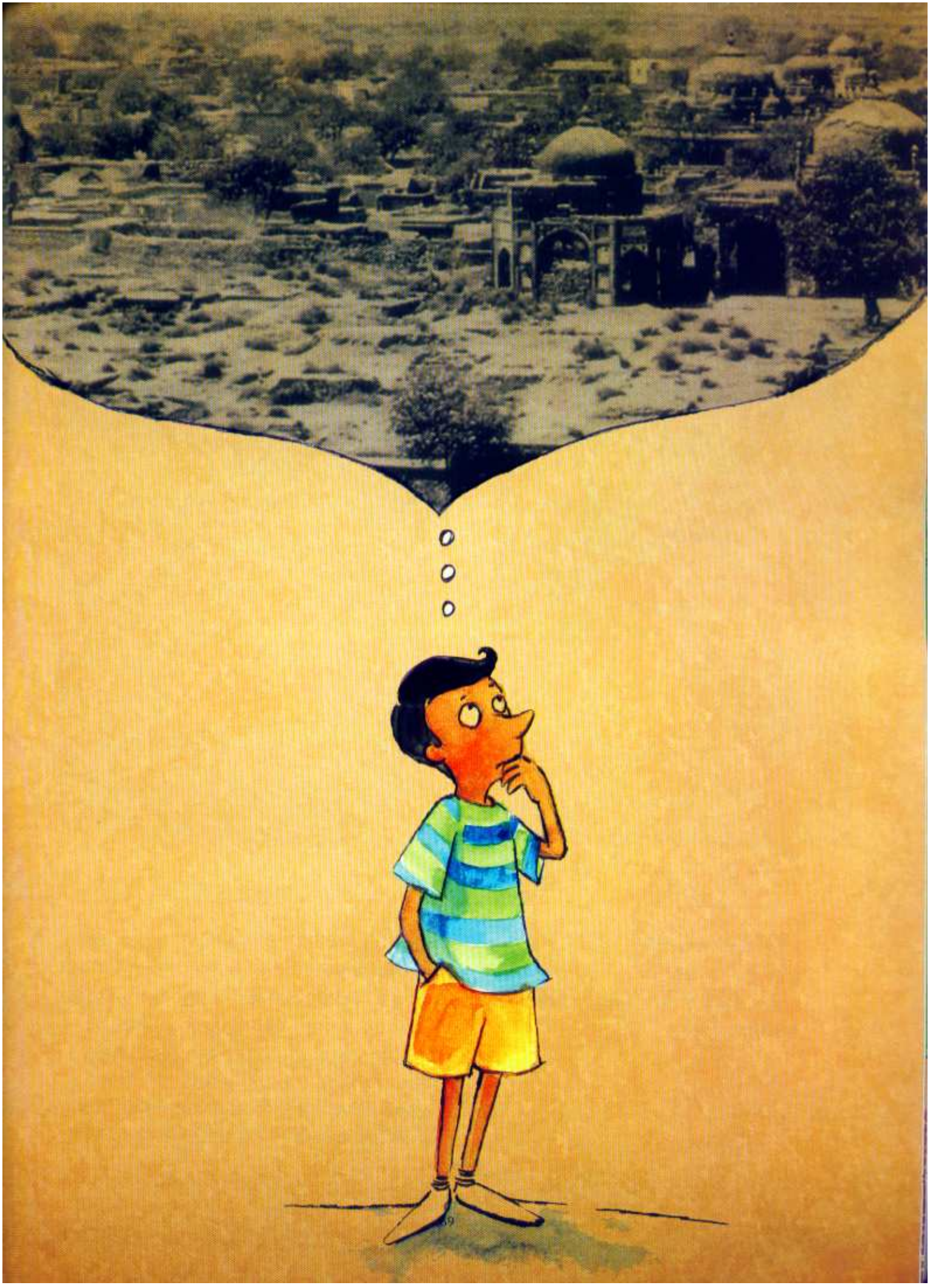

निज़ामुद्दीन क्षेत्र में भ्रमण

समीर और लीला हुमायूँ के मक़बरे के बाहर घूमते हैं। वे पाते हैं कि अमीर ख़ुसरो के अलावा दिल्ली के तीन प्रसिद्ध कवियों की क़ब्रें निज़ामुद्दीन में हैं।

रहीम

रहीम (अब्दुर्रहीम ख़ान–ए–ख़ानान) अकबर का मुख्य सेनापति था। वह एक महान विद्वान था और कई भाषाओं में कविता लिखता था। उसका मक़बरा भी लगभग हुमायूँ के मक़बरे के समान ही बड़ा था। दुर्भाग्य से 130 वर्ष बाद इसका बलुआ पत्थर और ऊपर लगी हुई संगमरमर की शिलाऐं हटाकर दिल्ली में सफ़दरजंग (वह अवध का शासक था) के मक़बरे में इस्तमाल कर ली गईं।

जहाँआरा

शाहजहाँ की पुत्री शहज़ादी जहाँआरा को एक कवयित्री के रूप में भी याद किया जाता है। उसकी क़ब्र पर अंकित उसकी कविता इस प्रकार है :

'बग़ैर सब्ज़ा न पोशद कस मज़ारे–ए मारा,
कि क़ब्रपोश–ए ग़रीबां हमीं गियाह बस अस्त'

हरी घास के अलावा मेरी क़ब्र को किसी चीज़ से न ढकना, क्योंकि ग़रीबों की क़ब्र को ढकने के लिये घास ही काफ़ी है

ग़ालिब

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ान 'ग़ालिब' भी सूफ़ी दरगाह के निकट दफ़न हैं।

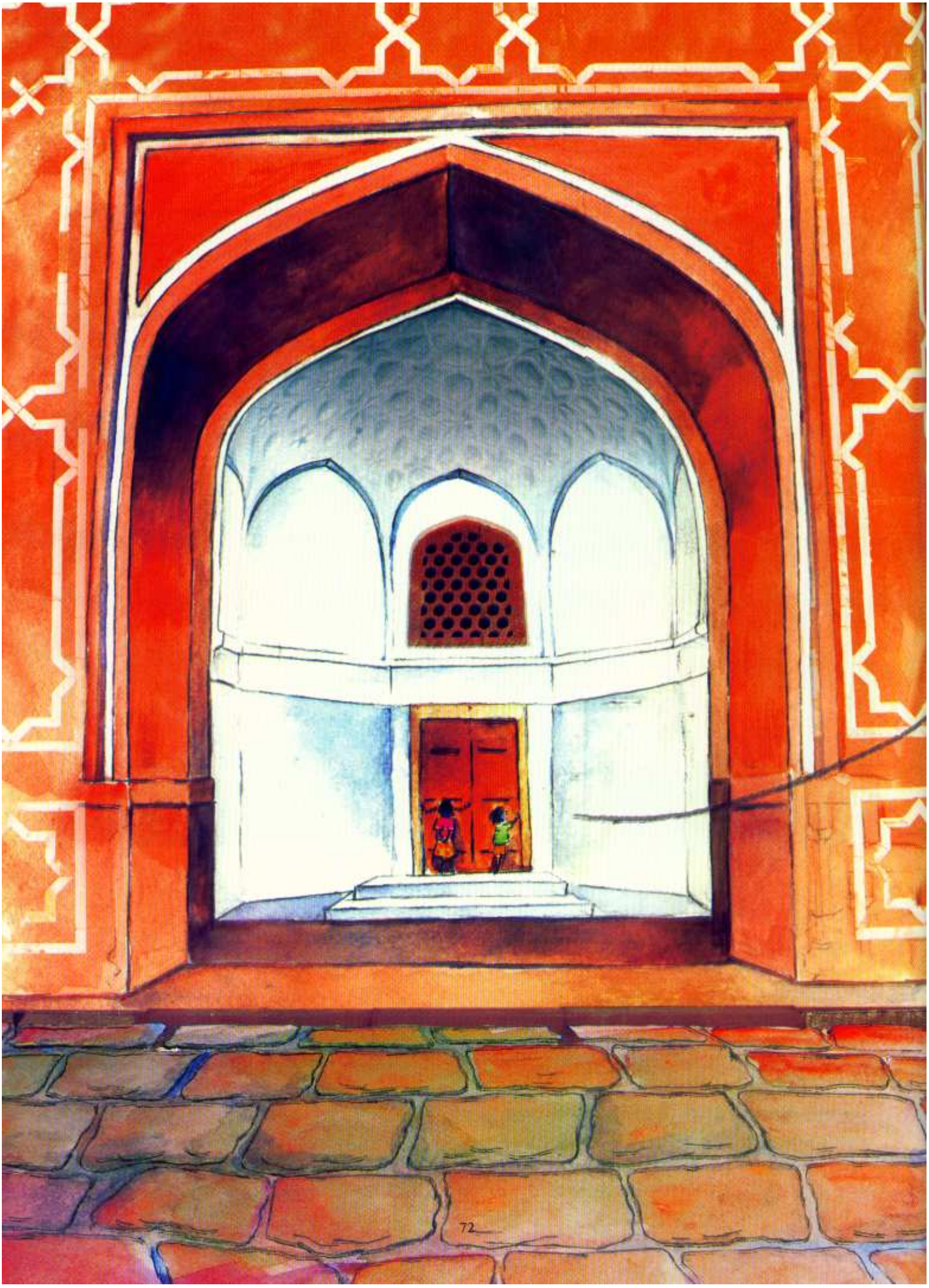

बाबर के वंश का अन्त

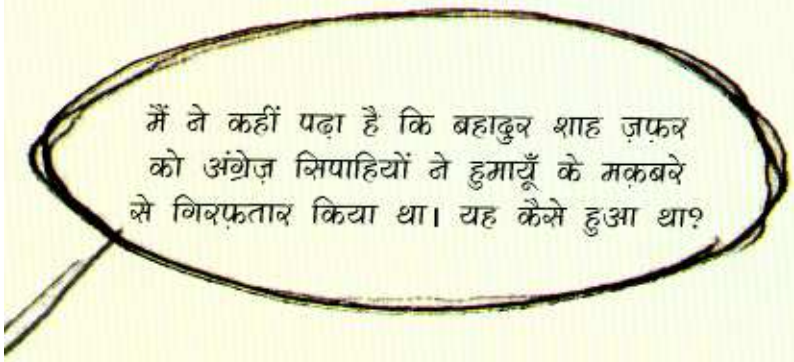

सितम्बर 1857 में बहादुर शाह द्वितीय ने लाल क़िला छोड़ दिया और नाव में बैठकर हुमायूँ के मक़बरे पहुँचे। ऐसा ही 300 वर्ष पूर्व हुआ था जब हुमायूँ शेर शाह से बचकर भागे थे, बहादुर शाह भी दुश्मन – अर्थात् अंग्रेज़ सिपाहियों से बचकर भाग रहे थे।

बहादुर शाह बूढ़े होने के कारण ज़्यादा दूर नहीं जा सके। सिपाहियों ने मक़बरे पहुँच कर उनको बन्दी बना लिया। उनकी पत्नी और पुत्र के साथ उनको देशनिकाला देकर बर्मा में यानगोन जेल भेज दिया गया। तीन वर्ष बाद दुःख और अकेलेपन की अवस्था में उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार बाबर के वंश का अन्त हो गया।

लगभग इसी समय भारत सरकार ने ऐतिहासिक इमारतों और हुमायूँ के मक़बरे को भी अपने अधीन ले लिया। अब इनको 'स्मारक' कहा जाने लगा और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इनकी 'रक्षा' की जानी थी। इन स्मारकों में अब कोई रह नहीं सकता था, हाँ इनमें प्रवेश कर घूम सकते थे। बाद में बने एक नियमानुसार स्मारकों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही दर्शकों के लिये खुला रखा जा सकता था।

बीते दिनों की याद

दिल्ली स्थित बहुत से स्मारकों को पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सुरक्षा हेतु अपने अधीन कर लिये जाने के 150 वर्षों के बाद शहर अब बहुत बड़ा हो गया है और हुमायूँ के मक़बरे के चारों ओर मीलों तक फैल गया है।

दस वर्ष की आयु में एक बालक के रूप में दिल्ली में रहते हुये प्रसिद्ध बालपुस्तकों के लेखक रस्किन बॉन्ड ने 1944 की शरद ऋतु का वर्णन इस प्रकार किया है: "मैं हुमायूँ के मक़बरे के पास (अपने पिता के साथ)..... एक बड़े तम्बू में रहता था। दिल्ली महानगर का यह भाग आज बहुत भीड़भाड़ वाला है परन्तु उन दिनों यह कटीले पेड़ों से भरा उजाड़ जंगल था जहाँ काले हिरण और नील गाय आराम से घूमती थीं।"

हुमायूँ के मक़बरे से और बहुत से लोगों की यादें जुड़ी हैं। 1947 में भारत के विभाजन के बाद मक़बरे का बाग़ पाकिस्तान से दिल्ली आने वाले सैकड़ों लोगों के लिये एक शरणस्थली बन गया था।

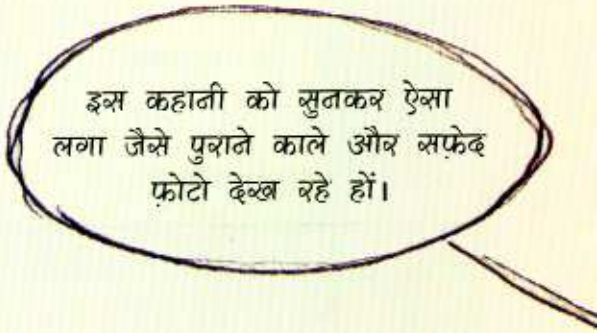

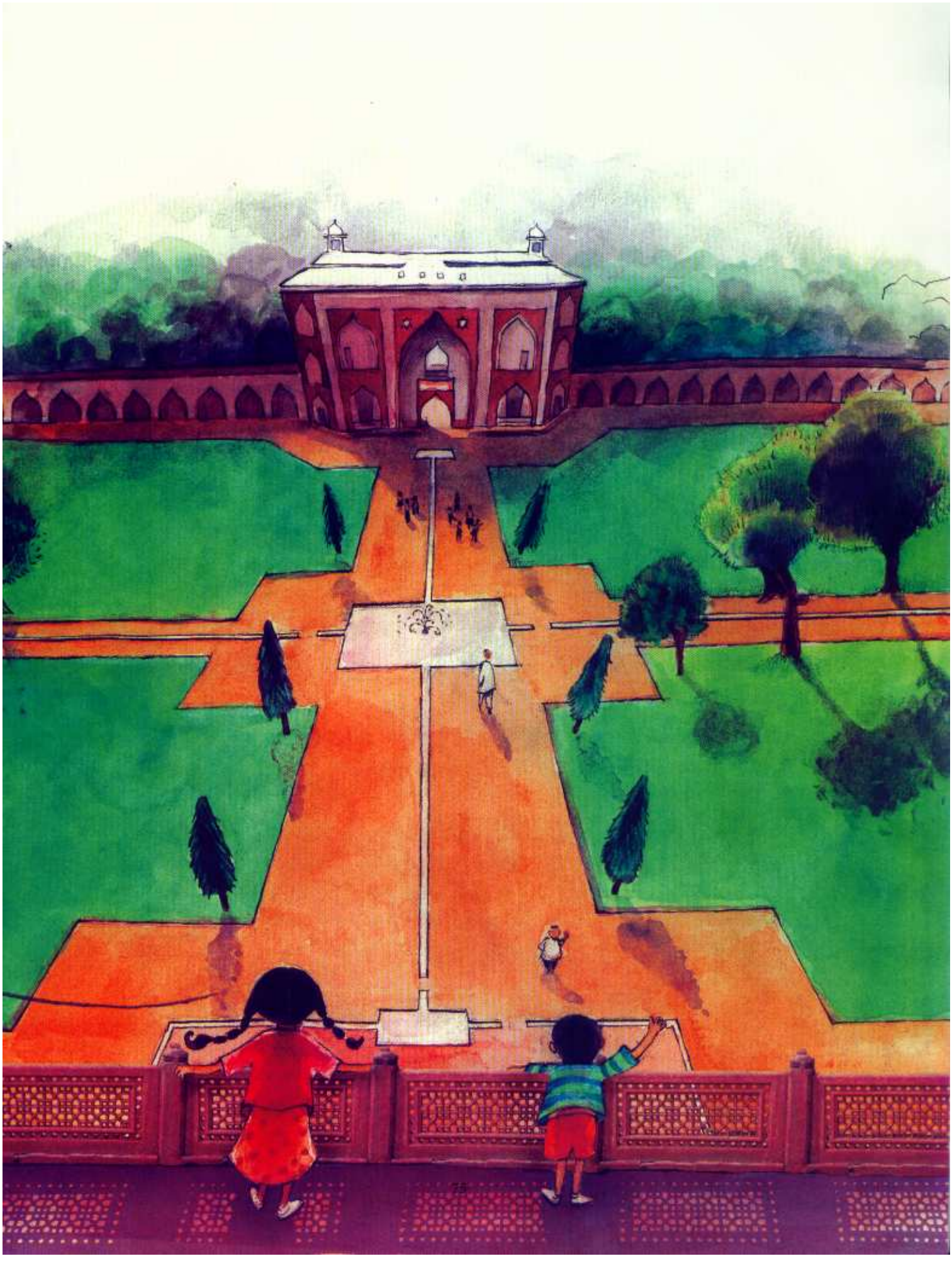

और समीर और लीला बड़े होकर क्या याद करेंगे?

यही कि किस प्रकार उन्होंने हुमायूँ के मक़बरे और बाग़ीचे की मूल सुन्दरता को बनाये रखने के लिये पत्थर काटने वालों, शिल्पकारों और मालियों को सावधानीपूर्वक कार्य करते देखा जिसे वर्षों के बाद भी लोग देखकर आश्चर्यचकित रह जायें।

इस प्रकार हम कहानी के अन्त तक पहुँच गये–वह कहानी जो दरगाह और मक़बरे की कहानी है–वे स्थान जो एक बड़े शहर के बीच शांति के दो द्वीप हैं।

अब आप लोगों के लिये, जिन्होंने हुमायूँ के बारे में जानने के लिये लीला और समीर के साथ भ्रमण किया, समय आ गया है कि अपने इस अद्भुत शहर के बारे में अपनी तरफ़ से कहानी लिखें।

कुछ और भी खोज करनी है

ईसा ख़ान का मक़बरा

अफ़सरवाला

सुन्दर बुर्ज की अन्दरूनी छत

चौंसठ खम्बा

ख़ान-ए-ख़ानन का मक़बरा

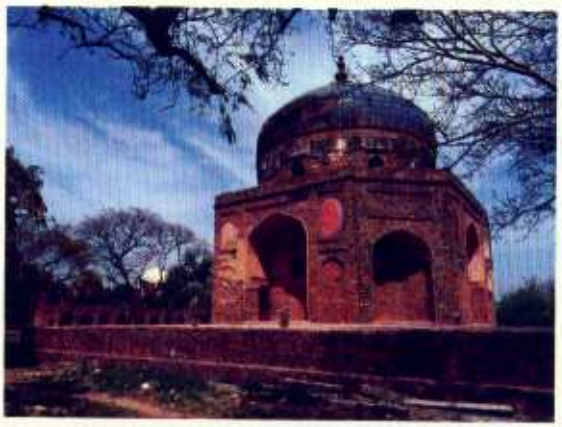

नीला गुम्बद

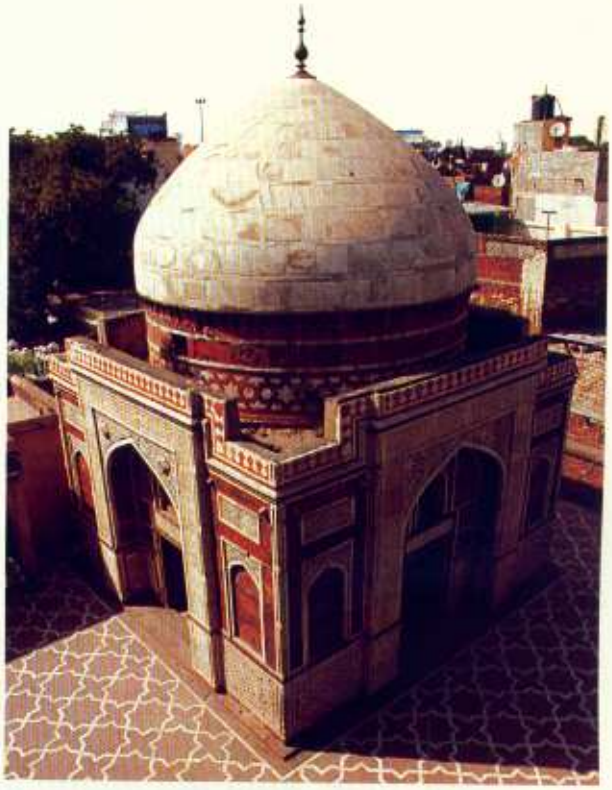

अतगा ख़ान का मक़बरा

लक्कड़वाला

बड़ा बताशेवाला

जमाअतख़ाना मस्जिद

ग़ालिब का मक़बरा

हुमायूँ का मक़बरा
विशिष्ट सर्वव्यापी महत्व

बादशाह हुमायूँ का बाग़ीचे में स्थित मक़बरा भारतीय एवं ईरानी शिल्पकारों द्वारा बनाया गया था जो किसी भी अन्य मक़बरे की तुलना में कहीं अधिक विशाल है। स्मारक का परिमाण, आने वाले समय में मुग़ल वास्तुकला के लक्षण निर्धारित करने का आधार बन गया।

हुमायूँ के मक़बरे के आस पास मुग़ल काल के प्रारम्भिक दौर के बाग़ीचे–स्थित अन्य मक़बरे भी हैं जिन में नीला गुम्बद, ईसा ख़ान का घेर, बू हलीमा का मक़बरा, बताशेवाला घेर, सुन्दरवाला घेर मुख्य हैं। विस्तृत निज़ामुद्दीन क्षेत्र में, लगभग सौ से भी अधिक स्मारक हैं, जो तेरहवीं शताब्दी या इसके बाद बने हैं, जिसके कारण यह जगह पूरे विश्व में मध्यकालीन इस्लामी इमारतों के घने समूह का केन्द्र बन गई है। यह क्षेत्र सात शताब्दियों से भी पुरानी जीवित विरासत और इस से संबंधित संगीत, आहार, अनुष्ठान और नाट्य संस्कृति का भी प्रदर्शन करता है। वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर शहरी नवीनीकरण की एक योजना पर कार्यरत हैं जिसका उद्देश्य न केवल इनमें से बहुत से स्मारकों को सुरक्षित करना, बल्कि सुरक्षा कार्य को सांस्कृतिक पुनःउद्धार के कार्यक्रमों द्वारा तथा शिक्षा व व्यवसायिक प्रशिक्षण, स्वास्थ्य रक्षा तथा आरोग्य संबंधी आधार–योजना से जोड़ कर स्थानीय समुदायों के जीवन–स्तर में सुधार भी लाना है। सांस्कृतिक पुनःउद्धार कार्यक्रम में फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन तथा हुमायूँ के मक़बरे के सुरक्षा कार्य में सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मिलकर धन जुटाने में सहायता कर रहे हैं।

योजना की विस्तृत जानकारी के लिये देखिए www.nizamuddinrenewal.org

या योजना की प्रगति के विषय में देखिए www.facebook.com/NizamuddinRenewal

बादशाह हुमायूँ का मक़बरा किसने बनवाया और इसी स्थान पर क्यों बनवाया?
दोहरा गुम्बद क्या है? गुम्बद के ऊपर
सोने की परत वाला कलश कितना ऊँचा है?
बाग़ीचे स्थित मक़बरा 'चार बाग़' क्यों
कहलाता है? बाग़ीचे का इस्तेमाल कैसे हुआ?

इन सभी और दूसरे कई प्रश्नों
के उत्तर इस पुस्तक में दिये गये हैं।
आइये हुमायूँ के मक़बरे के बारे में जानें।

आगा ख़ान ट्रस्ट फ़ॉर कल्चर